सम्पादकीय
गंगा सप्तमी, बुद्ध पूर्णिमा, गंगा दशहरा के दिन **इस भाव से करें गंगा पूजन और गंगा स्नान** «2

बलि प्रथा उन्मूलन में शानदार सफलता मिली 3»

गायत्री चेतना केन्द्र, शिमला का लोकार्पण 4»

दिल्ली, छत्तीसगढ़ और उत्तर प्रदेश में हुए युवा सम्मेलन 8»

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 मई 2022

वर्ष : 34, अंक : 21
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : **27 अप्रैल** 2022
वार्षिक चंदा : ₹60/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 800/-
प्रति अंक : ₹ 3/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

अवतारों की पुनीत परम्परा

सघन अन्धकार और गर्वीले घटाटोप को चीरकर भी बिजली तड़कती है। अन्धकार के बीच भी दीपक जलता है। रात्रि का समापन दिनमान के अरुणोदय से होता है। उसी प्रकार जब अव्यवस्था चरम सीमा पर होती है तो उसे नियंत्रित, परिवर्तित, परिष्कृत करने के लिए दैवी प्रभाव उभरते और तूफान की तरह काम करते हैं। जब-जब अधर्म की असाधारण अभिवृद्धि और धर्म-सदाचार की अवमानना हुई है और मनुष्यों के प्रयास से नियमन नहीं हो सका है, तब-तब सृष्टि की सुव्यवस्था को पुनः सन्तुलित करने के लिए विशिष्ट प्रतिभाओं का अवतरण होता रहा है। मध्यकाल में संव्याप्त अनाचार की प्रतिक्रिया हुई और उसके प्रतिरोध, उन्मूलन का प्रभावशाली माध्यम **'बुद्धावतार'** हुआ।

अवतार भी होते तो सामान्य लोगों जैसी आकृति के ही हैं, पर उनके व्यक्तित्व और कार्य ऐसे होते हैं जिसकी प्रभावशीलता समूचे वातावरण को झकझोरती और जनमानस को प्रसुप्ति से उभार कर जागृति की ओर अग्रसर करती है। उन्हें उठाकर खड़ा करती है और उनमें सृजन प्रयोजनों में जुट पड़ने के लिए आवेश भरती है। हर अवतार ने यही किया है। उसके प्रत्यक्ष क्रिया कलाप भले ही आकर्षक उत्तेजक होने के कारण जनता की स्मृति में रहते हों, पर होता यह है कि उस अवतरण की ऊर्जा से हर किसी को अभीष्ट चेतना एवं प्रेरणा उपलब्ध होती है और उत्कर्ष की दिशा में उनका प्रवाह चल पड़ता है।

बुद्धावतार का प्रयोजन एवं प्रभाव

अवतारों की श्रृंखला में नवम् अवतार बुद्ध का माना जाता है। इसी का उत्तरार्द्ध अगले दिनों निष्कलंक के रूप में दूरदर्शिता भरे विवेक के रूप में परिलक्षित होने जा रहा है। इस प्रकार अवतारों की श्रृंखला पूर्ण होगी और परिवर्तन चक्र के अनुसार सतयुग की वापसी का नया माहौल बनेगा।

अब से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व जब भगवान बुद्ध का प्रादुर्भाव हुआ था, उस समय भी आज की ही तरह जनमानस का चिन्तन एवं कर्तृत्व बहुत ही निकृष्ट स्तर का हो चला था। तान्त्रिक एवं वाममार्गी साधनाओं के नाम पर सर्वत्र भ्रष्टाचार फैला हुआ था। लोग निकृष्ट एवं भ्रष्ट जीवन जीते हुए भी अमुक कर्मकाण्डों, पूजा-विधानों आदि बाह्योपचारों के बहाने स्वर्ग-मुक्ति आदि की आशा किया करते थे। तन्त्र में अलंकारिक रूप में वर्णित पंचमकार मद्य, माँस, मीन, मुद्रा, मैथुन को खुली छूट मान लिया गया था। चरित्र एवं सदाचरण जैसे शब्दों को उपहासास्पद मूर्खता समझा जाता था। यज्ञों के बहाने मद्य, मांस का भरपूर सेवन होता था। देवी-देवताओं के नाम पर बलि-प्रथा का खूब जोरों पर प्रचलन था। भैरवी चक्र ने व्यभिचार को पूरी तरह छूट दे रखी थी। उस अनाचार एवं दुराचरण

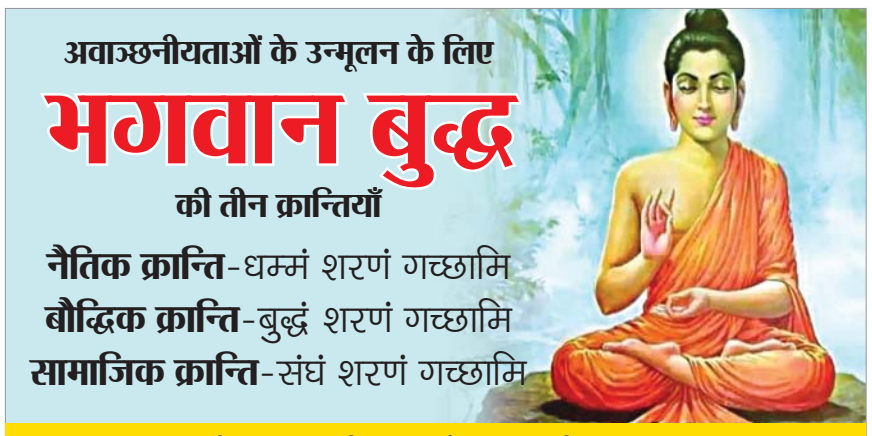

बुद्ध पूर्णिमा : 16 मई 2022, वैशाख पूर्णिमा, संवत् 2079

का परिणाम वही हो रहा था जो होना चाहिए। लोग रोग-शोक, पाप-ताप, क्लेश-कलह, दुःख-दारिद्रय में बुरी तरह डूबे हुए थे। सर्वत्र अशान्ति का हाहाकार था।

ऐसी भीषण, प्रतिकूल एवं चारों ओर उद्विग्नता से भरी परिस्थितियों में गौतम बुद्ध जन्मे। बुद्ध ने युवावस्था में प्रवेश करते ही जीवन लक्ष्य को समझा और उसे पूरा करने के लिए व्रत लिया। छोटे परिवार के लिए भरण-पोषण की व्यवस्था थी, आवश्यक नहीं था कि उन्हीं के लाड़-दुलार में अपना वह बहुमूल्य जीवन खपायें जो विश्व कल्याण की महती आवश्यकता पूर्ण कर सकने में भली प्रकार समर्थ हो सकता है।

घर से चलकर उन्होंने सर्वप्रथम आत्मबोध और आत्म-परिष्कार की साधना की। उससे पूर्व जन्मों के सभी संचित कुसंस्कारों का समापन हुआ और नये सिरे से ब्रह्मवर्चस की तेजस्विता निखरी। अब उच्चस्तरीय कार्यक्रमों में ही संलग्न होना था। करने के लिए दो कार्य ही प्रधान थे- एक अधर्म का उन्मूलन व दूसरा धर्म का संस्थापन। इसी को दूसरे शब्दों में यों भी कहा जा सकता है-दुष्प्रवृत्तियों को उखाड़ फेंकने वाला प्राणवान संघर्ष और दूसरा तात्विक ऋषि परम्परा की गतिविधियों को पुनर्जीवन प्रदान करना।

चारों ओर जो हो रहा था, उसे आँख पसार कर देखा और सोचा कि गलाई के बिना ढलाई नहीं हो सकती। कपड़े धोये बिना उस पर रंग नहीं चढ़ सकता। जोते बिना खेत बोया नहीं जा सकता। इसके लिए सर्वप्रथम टूटफूट की मरम्मत करने का काम हाथ में लेना चाहिए। यही उन्होंने किया भी।

उन दिनों लोग आचरण में उत्कृष्टता का वरण न करके देवता की प्रसन्नता के लिए मनुहार करने और उपहार देने में लगे थे। शास्त्र के नाम पर, ईश्वर निर्देश के नाम पर कुप्रचलनों का समर्थन करने की प्रथा चल रही थी। कुरीतियों को पूर्वजों का मार्ग समझकर अपना लिया गया था। वे ऋषि परम्परा का आवरण ओढ़कर वह कर रहे थे जिसे छद्म पाखण्ड एवं अनाचारी स्वार्थ साधन ही कहा जा सकता था।

बुद्ध ने उस समूचे जाल जंजाल को एक ही झटके में तोड़ फेंका और त्रिपदा गायत्री जैसा, त्रिवेणी संगम जैसा तीन सूत्रीय आस्था संकल्प का उद्भव किया। यह था-(1) धम्मं शरणं गच्छामि (2) बुद्धं शरणं गच्छामि (3) संघं शरणं गच्छामि। अर्थात्-विवेक को सर्वोच्च मानता हूँ। नीति अपनाने और सदाचरण की प्रतिज्ञा लेता हूँ। संघ के, समाज के हित साधन को प्रधानता दूँगा। इन तीनों को दूसरे शब्दों में आस्तिकता का, आध्यात्मिकता का, धार्मिकता का; भक्ति, ज्ञान और कर्म का सार तत्त्व कहा जा सकता है। यह तीनों ही आदर्श ऐसे हैं, जिनके बिना न व्यक्तिगत जीवन सुख-शान्तिमय बन सकता है और न समाज की प्रगति एवं समृद्धि हो सकती है।

धर्ममय जीवन जियो

अधर्म का आचरण करने वाले असंयमी, पापी, स्वार्थी, कपटी, धूर्त और दुराचारी लोग शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य एवं धन-सम्पत्ति, यश-वैभव आदि सब कुछ खो बैठते हैं। उन्हें बाह्य जगत में घृणा और तिरस्कार तथा अन्तरात्मा में धिक्कार ही उपलब्ध होते हैं। ऐसे लोग भले ही उपभोग के कुछ साधन इकट्ठे कर लें, पर अनीति का मार्ग अपनाने के कारण उनका रोम-रोम अशान्त एवं आत्म-प्रताड़ना की आग में झुलसता रहता है। चारों ओर उन्हें घृणा-तिरस्कार एवं असहयोग ही मिलता है। आतंक के बल पर यदि वे कुछ पा भी लेते हैं तो उपभोग के पश्चात् वह उनके लिए विषतुल्य दुःखदायक ही सिद्ध होता है। **आत्म-शान्ति पाने, सुसंयमित जीवन व्यतीत करने वाले मनुष्य को धर्ममय जीवनक्रम अपनाने के ही लिए तत्पर होना पड़ता है। नैतिकता, मानवता एवं कर्तव्य परायणता को ही अपने जीवन में समाविष्ट करना होता है। इस प्रवृत्ति का व्यापक प्रसार करने के लिए किये गये प्रयत्नों को नैतिक क्रान्ति की संज्ञा दी जाती है।** बुद्ध धर्म के प्रथम मन्त्र 'धम्मं शरणं गच्छामि' में इसी नैतिक क्रांति की चिंगारी निहित है।

विवेक सम्मत नहीं तो अस्वीकार्य

दूसरे मन्त्र 'बुद्धं शरणं गच्छामि' में विवेक बुद्धि को सर्वोपरि महत्व दिया गया है। कालान्तर में पुरानी अच्छी प्रथा-परम्परायें भी रुढ़ियों और अन्ध विश्वासों से दब जाती हैं, तब उनका सुधार और परिवर्तन अनिवार्य हो जाता है। उस जमाने में अनीतिपूर्ण असंख्यों कुप्रथायें पनप रही थीं। लोग उनका समर्थन और अनुकरण इसलिए करते थे कि यह बातें पूर्वकाल से चली आ रही हैं। बुद्ध ने बताया कि पूर्वकाल से चली आने के कारण ही कोई प्रथा-परम्परा या विचारधारा मान्य नहीं हो सकती। विवेक का स्थान सर्वोपरि है। जो बातें विवेक सम्मत न हों, वे किसी की भी कही हुई क्यों न हों, कितनी ही पुरानी क्यों न हों, उन्हें स्वीकार नहीं किया जा सकता।

जब लोगों ने तांत्रिकी हिंसा को वेद सम्मत बताया तो उन्होंने वेद को मानने से भी इन्कार कर दिया। उनने कहा-विवेक से बढ़कर वेद नहीं हो सकता। यदि वेद अनाचार का प्रतिपादन करता हो तो वह कितना ही प्राचीन और किसी का भी बनाया हुआ हो माना जाने योग्य नहीं। उन्होंने अपने समय की अनेकों कुरीतियों और अनुपयुक्त रूढ़ियों-प्रचलनों एवं मान्यताओं को तोड़-मरोड़कर रख दिया। इसे 'बौद्धिक क्रान्ति' ही कहा जा सकता है।

सत्पुरुष संगठित रहें

बुद्ध धर्म के तीसरे मन्त्र 'संघं शरणं गच्छामि' में प्रत्येक व्यक्ति को संघबद्ध, अनुशासित रहने की प्रेरणा है। उच्छृंखलता, व्यक्तिवाद, संकीर्ण स्वार्थ परायणता, अनुशासनहीनता, अनुदारता की महामारी जिस समाज में भी लग जाती है, अन्ततः वह विनष्ट ही हो जाता है।

सत्पुरुषों, श्रेष्ठ व्यक्तियों का सामूहिक रूप से संघबद्ध रहना भी आवश्यक है, क्योंकि जनमानस के पतनोन्मुख प्रवाह को रोकने के लिए एकांकी व्यक्ति का प्रयत्न पर्याप्त नहीं होता, चाहे वह कितना ही प्रतिभा सम्पन्न क्यों न हो। इसके लिए संघशक्ति-संगठित प्रयासों की ही आवश्यकता एवं अपेक्षा रहती है। बौद्ध भिक्षुओं का निवास एवं कार्यक्रम अलग-अलग गुफाओं में दूर-दूर रहने की अपेक्षा विशाल संघारामों में ही रहने का होता था।

त्रेता में भगवान राम ने रीछ-वानरों का संघबद्ध सहयोग प्राप्त करके आसुरी प्रवाह को रोकने का संघर्ष किया व सफलता पायी। बुद्ध ने यह भली-भाँति समझ लिया था कि जनशक्ति के सहयोग से ही अभीष्ट उद्देश्य में सफल होना सम्भव है। उन्होंने त्यागी, लोकसेवी और सदाचारी जाग्रत् आत्माओं की एक विशाल सेना खड़ी की थी। उनके व्यापक एवं प्रबल प्रयासों ने समाज की अवांछनीय स्थिति को बदल कर रख दिया। आसुरी तत्वों को कुचल-मसलकर परे कर दिया। इस दृष्टि से बुद्ध धर्म को सामाजिक क्रान्ति का सूत्रधार कहा जा सकता है।

वाङ्मय खण्ड-29, (सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण) पृष्ठ 6.13-6.16 से संकलित, सम्पादित

गंगा सप्तमी : 8 मई 2022
बुद्ध पूर्णिमा : 16 मई 2022
(गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान)
15 एवं 16 मई 2022
गंगा दशहरा-गायत्री जयंती : 10 जून 2022

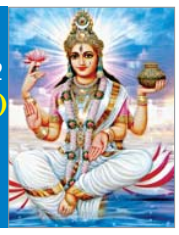

इस भाव से करें गंगा पूजन और गंगा स्नान

यह सांस्कृतिक चेतना के पुनर्जागरण का अत्यंत महत्त्वपूर्ण अवसर है

गंगावतरण की कथा

महाराजा सगर ने यज्ञ किया। इंद्र ने इस यज्ञ के अश्व का अपहरण कर उसे समाधिस्थ कपिल मुनि के आश्रम में छोड़ दिया। अश्व को ढूँढ़ते हुए सगर के पौत्र अंशुमान और 60 हजार प्रजाजन जब कपिल मुनि के आश्रम में पहुँचे तो वहाँ अश्व को देखकर उनके प्रति अपमानजनक शब्द करने लगे। मुनि की समाधि टूटी और उन्होंने शाप देकर सभी को भस्म कर दिया। महाराज सगर ने मुनि के चरणों में गिड़गिड़ाते हुए अपने पुत्र, पौत्र एवं प्रजा के उद्धार का उपाय पूछा तो उन्होंने बताया कि स्वर्ग में प्रवाहित होने वाली माँ गंगा ही उनका उद्धार कर सकती हैं।

राजा सगर की कई पीढ़ियों ने माँ गंगा को धरती पर अवतरित करने के लिए घोर तप किया। अंततः राजा दिलीप के पुत्र महर्षि भगीरथ के तप से ब्रह्माजी प्रसन्न हुए, लेकिन उन्होंने कहा कि गंगा के वेग को धारण करने की क्षमता केवल शिवजी में है, धरती में नहीं। भगीरथ ने पुनः अपने तप से शिवजी को प्रसन्न किया और माँ गंगा को जटाओं में धारण कर उन्हें धरती पर प्रवाहित करने के लिए सहमत किया। माँ गंगा अवतरित हुईं। सगर-सुतों का उद्धार हुआ और माँ गंगा की अनुकम्पा से पृथ्वी पर स्वर्ग की सृष्टि हुई।

कथा पौराणिक है, लेकिन आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी कि पहले कभी रही होगी। क्या आज विश्व के लगभग 790 करोड़ लोग अभिशप्तों जैसा जीवन नहीं जी रहे हैं। क्या वे भौतिकता, स्वार्थ-संकीर्णता, धर्मान्धता जैसे अवगुणों का अभिशाप नहीं झेल रहे हैं। इंसान को जीने के लिए दो वक्त की रोटी, तन ढकने के लिए कुछ कपड़े और सिर छिपाने के लिए एक घर की आवश्यकता होती है। सारी दुनिया के लिए जीवनावश्यक संसाधनों से शायद हजारों गुना संसाधन धरती पर उपलब्ध हैं, लेकिन फिर भी करोड़ों लोग भूख और दरिद्रता से बेहाल हैं। जो बुद्धि और श्रम संसाधनों के विकास में लगना चाहिए था वह आज बम-बारूद में लग रहा है। क्षण भंगुर सुख की चाह में धरती माँ का पेट फाड़कर उसमें से सारा तेल और खनिज निकालकर उसे खोखला करने तथा धरती माँ के हरेभरे आँचल को वीरान करने की होड़ लगी है। परिणाम सामने है। देखा जाए तो आज सारी दुनिया मानव जीवन की गरिमा और सृजनात्मक सामर्थ्य को भूलकर अपने अस्तित्व के लिए ही बेचैन है। यह अभिशाप नहीं तो क्या है?

आज दुनिया को तमाम अवांछनीयताओं के अभिशाप से यदि कोई मुक्ति दिला सकता है तो वह माँ गंगा ही है। इस संसार को पुनः उन भागीरथों की आवश्यकता है जो अपने तप से गंगा को अवतरित कर मानवता का उद्धार कर सकें।

तत्त्वदर्शन समझें

हमारे पुराणों एवं आर्षग्रंथों में बहुत सारे दृष्टांत अलंकारिक हैं। स्वयं परम पूज्य गुरुदेव कहा करते थे कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, दुर्गा, सरस्वती, काली आदि देवी-देवताओं का जो स्वरूप चित्रों में दर्शाया जाता है वह अलंकारिक है। उन्होंने उनका तत्त्वदर्शन भी समझाया और उसी को आचरण में उतारने की प्रेरणा भी दी। संभव है गंगावतरण के इस कथानक का वर्णन भी अलंकारिक दृष्टि से किया गया हो। लेकिन उसका तत्त्वदर्शन समझ में आ जाये तो बात बन जाएगी।

कपिल मुनि ने राजा सगर के पुत्रों को शाप उनके अहंकार के कारण दिया था, जिससे वे भस्मीभूत हो गए। लोभ, मोह, अहंकार, वासना, तृष्णा जैसे अवगुणों की परिणति ऐसी ही होती है। इनके दुष्परिणाम हर व्यक्ति के जीवन में देखे जा सकते हैं। इन दुर्गुण-दुष्वृत्तियों के कारण कोई क्षणिक सुख भले ही पा ले, वाहवाही भले ही लूट ले, लेकिन अंततः परिणाम बुरा ही होता है। उनके अभिशाप से मुक्ति पाने के लिए गंगावतरण की ही आवश्यकता पड़ती है।

गंगावतरण तप से ही संभव है। फूल तो झाड़-झंखाड़ों में भी खिलते हैं, लेकिन सुरम्य उद्यान लगाना हो तो कठिन परिश्रम करना ही पड़ता है। जीवन तो हर कोई जी लेता है, लेकिन मानवोचित गरिमा के साथ जीवन जीना हो तो सद्गुणों के विकास की, श्रेष्ठता को धारण करने की साधना करनी ही पड़ती है।

शिवजी द्वारा मस्तक पर गंगा को धारण करने का तात्पर्य है कि शक्ति और गुणों का उपयोग विवेक, संयम, सदाचारपूर्वक शुभ कार्यों के लिए किया जाए, तभी वे लाभकारी होते हैं। जब उनका उपयोग असुरों की भाँति असंयमित ढंग से होने लगता है तो विपत्ति और विनाश को ही जन्म देता है।

गंगा और गायत्री

गंगा एक नदी के रूप में बहती हुई जलधारा ही नहीं है। वह पाप, ताप, अभिशाप से मुक्ति दिलाने वाला विशिष्ट गुणों से युक्त दिव्य प्रवाह है। गायत्री भी प्राणदायिनी और पापनाशिनी है। वस्तुतः गंगा और गायत्री दोनों एक ही दिव्य प्रवाह की दो धाराएँ हैं। गंगा भौतिक जगत में प्रवाहित होती है और प्राणदायिनी गायत्री अंतर्जगत को आलोकित करती है। दोनों परस्पर पूरक हैं, जीवन के उत्थान के लिए दोनों ही आवश्यक हैं।

भारतीय जनमानस में गोमुख से गंगासागर तक प्रवाहित होने वाली गंगा के प्रति अगाध श्रद्धा है। यह श्रद्धा अनायास नहीं है। भागीरथी तप के प्रभाव से स्वर्ग से उतरकर आई सुरसरि विशिष्ट दैवी गुणों से परिपूर्ण है। यह पवित्रता और ज्ञान का पर्याय है। गंगातट पर ऋषिकेश, हरिद्वार, प्रयागराज, काशी, गंगासागर जैसी अनेक तीर्थ नगर बसे हैं। गंगा ने इनमें बसने वाले अनगिनत ऋषि-मुनियों को अनुप्राणित किया है। गंगा युगों-युगों से सनातन संस्कृति की संवाहक रही है। जनमानस में पवित्रता, भावसंवेदनाओं का संचार करती रही है। गंगा लगभग आधे भारत की जीवनधारा कही जाती है, उनकी सुख-समृद्धि का आधार है।

गंगा पापनाशिनी है, मोक्षदायिनी है, लेकिन यह तभी संभव है जब गंगा जैसी पवित्रता, निर्मलता, उदारता, परमार्थपरायणता का जीवन में समावेश होने लगे। यह गायत्री उपासना-साधना से संभव होने लगता है। लौकिक जगत में प्रवाहित होने वाली गंगा में डुबकी लगाकर कितने लोग पापमुक्त हुए यह तो पता नहीं, लेकिन गायत्री उपासना से निश्चित ही जीवन का कायाकल्प होने लगता है। गायत्री उपासना जीवन में नवप्राणों का, आत्मबल का, श्रद्धा और विश्वास का संचार करने वाली है। जिन्हें अपने पापों से मुक्ति और मोक्ष पाने जैसी कामना हो उन्हें गंगाजी की दिव्यता को हृदयंगम करके गायत्री उपासना द्वारा उसे धारण करने की साधना करनी चाहिए।

गंगा सप्तमी, बुद्ध पूर्णिमा, गंगा दशहरा पर गंगा-गायत्री पूजन

वैशाख शुक्ल सप्तमी-गंगा सप्तमी (इस वर्ष 8 मई 2022) के दिन गंगापूजन एवं गंगा स्नान का विशेष महत्त्व है। कहते हैं कि ऐसा करने से मनुष्य को सभी प्रकार के दुःखों से मुक्ति मिल जाती है। लेकिन हमें समझना चाहिए कि केवल गंगाजी में डुबकी लगाना ही पर्याप्त नहीं है, गंगाजी की दिव्यता का बार-बार स्मरण करना और उसे जीवन में धारण करना भी आवश्यक है। सभी लोगों का गंगाजी तक पहुँचना और गंगास्नान करना भी संभव नहीं हो पाता, लेकिन यह तथ्य समझ में आ जाये तो संत रैदास की तरह 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' कहावत सिद्ध हो जाए और गंगास्नान का वही पुण्यलाभ घर में गंगापूजन करते हुए भी मिल जाए।

प्रायः सभी हिन्दू परिवारों में गंगाजल होता ही है। अखिल विश्व गायत्री परिवार ने भी शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष और हरिद्वार कुम्भ-2021 के अवसर पर 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान चलाते हुए 15 लाख घरों में 'गंगाजल, गायत्री और सत्साहित्य' की स्थापना की है। आगामी गंगा सप्तमी व गंगा दशहरा-गायत्री जयन्ती (10 जून) के दिन विशेष पूजन तथा बुद्ध पूर्णिमा (16 मई) पर होने वाले गृहे-गृहे यज्ञ-उपासना अभियान के समय घर में स्थापित गंगाजल का पूजन करते हुए गंगापूजन और गंगास्नान का तत्त्वदर्शन समझाया जा सके तो सांस्कृतिक चेतना के पुनर्जागरण का एक बहुत बड़ा प्रयोजन सिद्ध हो सकता है।

गंगा-गायत्री पूजन के कार्यक्रम व्यक्तिगत स्तर पर किए जा सकते हैं और सामूहिक स्तर पर भी। सामूहिक स्तर पर किए गए प्रयास अधिक प्रभावशाली होते हैं। पूजन का कर्मकाण्ड तो अपनी-अपनी सुविधा के अनुसार सामान्य पूजा-प्रार्थना, यज्ञ, दीपयज्ञ, सूक्ष्मयज्ञ आदि के साथ निर्धारित किया जा सकता है, लेकिन गंगामाता के प्रति श्रद्धा के भाव जितने अधिक उभारे जा सकें, उतना ही कार्यक्रम सफल माना जाएगा।

पूजा के भाव और प्रयोजन

सांस्कृतिक चेतना : गंगा विश्ववंद्य सनातन संस्कृति की संवाहक है। गंगापूजन के समय उस महान संस्कृति का स्मरण करना और कराना चाहिए। जब तक अपनी संस्कृति के प्रति प्रगाढ़ आस्था न हो, तब तक समाज और संस्कृति के उत्थान की हूक नहीं उठती। धरती पर स्वर्ग और सतयुग की वापसी बिना सांस्कृतिक चेतना के पुनर्जीवन के संभव नहीं है।

पवित्रता : गंगा निर्मल है, पावन है। अपने विशिष्ट औषधीय गुणों के कारण गंगाजल खराब नहीं होता। पवित्रता और पाप परस्पर विरोधी हैं। गंगाजल की पवित्रता की तरह जीवन में शुचिता, सच्चाई और अच्छाई का समावेश होता जाए तो जीवन सहज ही पापमुक्त होता चला जाएगा।

परमार्थ परायणता : गंगा लोकमंगल के लिए स्वर्ग को छोड़ धरती पर आई। जो भी लोकमंगल का यह पथ अपनाता है, गंगा की तरह ही सहज श्रद्धा का पात्र बनता जाता है। वह दैवी अनुग्रह का अधिकारी बनता जाता है।

मातृत्व का भाव : गंगा को हम माँ कहकर पुकारते हैं। जैसा पवित्र भाव हमारा गंगा मैय्या के साथ है, वैसा ही मातृत्व का भाव सभी माताओं, बहिनों, बेटियों के प्रति होना चाहिए। '**नारी सशक्तीकरण वर्ष**' की दृष्टि से समाज में यह भाव विकसित करना अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

नवयुग की ज्ञानगंगोत्री-शान्तिकुञ्ज : गीता में श्रीभगवान कहते हैं कि ज्ञान से बढ़कर कोई वस्तु नहीं है। परम पूज्य गुरुदेव युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने उनकी कर्मभूमि एवं तपोभूमि शान्तिकुञ्ज से ज्ञान की वह गंगा प्रवाहित की है, जिसमें स्नान कर जीवन की हताशा, निराशा, नकारात्मकता सहज ही दूर होने लगती है। स्वयं परम पूज्य गुरुदेव इसे नवयुग की ज्ञानगंगोत्री कहते रहे हैं। यहाँ से दिव्यता का वह प्रवाह निःसृत होता है, जिसके ध्यान और सान्निध्य मात्र से जीवन में आशा, उत्साह का संचार होने लगता है। गंगा सप्तमी पर गंगापूजन के साथ श्रद्धालुओं को इस दिव्यता का बोध करना-कराना चाहिए।

घर-घर गायत्री यज्ञ (बुद्ध पूर्णिमा)

जैसा कि ऊपर बताया गया है, गंगा और गायत्री एक ही प्राण प्रवाह की परस्पर पूरक धाराएँ हैं। अंतःकरण में संवेदनाएँ जागेंगी, पवित्रता बढ़ेगी, तभी सामाजिक जीवन में शुचिता, सद्भाव, सदाचार बढ़ेगा। लोगों को इस ओर जाग्रत् करने और जीवन साधना में प्रवृत्त करने के लिए अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा 'गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना' अभियान चलाया जा रहा है। यह अभियान हर क्षेत्र में बहुत लोकप्रिय हुआ है।

विगत कुछ वर्षों से बुद्ध पूर्णिमा के दिन देश-विदेश में विराट स्तर पर सामूहिक यज्ञ के प्रयोग हुए हैं, जिनमें एक ही दिन में 24 लाख घरों में यज्ञ किए गए हैं। इस वर्ष भी 16 मई 2022 (बुद्ध पूर्णिमा) के दिन सामूहिक यज्ञ अभियान चलाकर देश में 25 लाख घरों में गायत्री यज्ञ कराने की योजना है। बहुत-से राज्यों में बुद्ध पूर्णिमा के दिन अवकाश नहीं होता, वहाँ 15 मई (रविवार) के दिन भी यह सामूहिक यज्ञीय कार्यक्रम किए जा सकते हैं।

जल संरक्षण-स्वच्छता अभियान

गंगापूजन का एक रूप वर्तमान जलसंकट के समाधान के लिए प्रयत्नशील होना भी है। अतः गायत्री परिवार पूरे देश में प्रत्येक जलस्रोत को गंगा का ही स्वरूप मानते हुए जलसंरक्षण-स्वच्छता अभियान चलाएगा। इसके अंतर्गत नदी एवं तालाबों (**श्रीराम सरोवर, हरित सरोवर आदि**) की स्वच्छता, उनके गहरीकरण, जलस्रोतों को प्रदूषित न होने देने के लिए व्यापक स्तर पर जनजागरूकता, वृक्षारोपण जैसे कार्यक्रम रखे जा रहे हैं। गायत्री परिवार एवं सहयोगी संगठन, सेवाभावी परिजन लाखों की संख्या में इस विराट अभियान से जुड़ेंगे।

वर्तमान समय में गंगापूजन के तत्त्वदर्शन को समझकर देश के सभी लोग यदि इसे अपनाने लगें तो यह समाज और राष्ट्र के नवनिर्माण का एक विराट अभियान बन जाए। गंगापूजन आज के समय की आवश्यकता ही नहीं, अनिवार्यता है।

गंगा सप्तमी : 8 मई 2022

जलाशयों पर सामूहिक स्वच्छता एवं जनजागरण अभियान

जल है तो जीवन है। अतः नदी, तालाब, प्रत्येक जलस्रोत को गंगा का ही रूप मानते हुए जलसंरक्षण-स्वच्छता अभियान चलाना। उनके तट, घाट आदि की सफाई। भविष्य में उन्हें प्रदूषित न होने देने के लिए जनजागरूकता अभियान। नदीतट एवं जलाशयों के किनारे वृक्षारोपण।

बुद्ध पूर्णिमा : 16 मई 2022

गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान (लक्ष्य 25 लाख घर)

पुरोहित प्रशिक्षण, कार्यक्रम निर्धारण आदि का क्रम प्रारम्भ हो गया है। ऑनलाइन और ऑफ लाइन प्रचार एवं प्रशिक्षण की समग्र योजना एवं आवश्यक सामग्री शान्तिकुञ्ज में उपलब्ध है।

संपर्क कीजिए : **web: www.awgp.org www.diya.net.in**
Phone: 9258360934, 9258360652 **Email:** youthcell@awgp.org

सामाजिक संवेदनाओं को उकेरती युग सृजेताओं की सक्रियता

48वाँ शिविर, 201 यूनिट रक्तदान हुआ

जमशेदपुर। झारखण्ड

गायत्री शक्तिपीठ टाटानगर के 41 वें स्थापना दिवस पर नवयुगदल द्वारा 48 वाँ रक्तदान शिविर साकची इंडियन मेडिकल एसोसिएशन भवन में आयोजित किया गया। मुख्य अथिति डॉ. सौरभ चौधरी (महा सचिव आई.एम.ए.), विशिष्ट अथिति डॉ. दिलीप तिवारी (Exploration Geologist Natural resources division Tata steel), श्रीमान रत्नेश रत्न (पोस्टमास्टर साकची पोस्ट ऑफिस) श्रीमती जसवीर कौर, पूर्व अध्यक्ष प्रज्ञा महिला मंडल, टाटानगर) एवं प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ के संयोजक श्री संतोष कुमार राय द्वारा दीप प्रज्वलन, देव आह्वान के साथ शिविर प्रारम्भ हुआ। अतिथि महानुभावों ने कहा कि आज मेडिकल साइंस बहुत प्रगति पर है। आज हार्ट सर्जरी, लिवर ट्रांसप्लांट हो रहे हैं, परंतु रक्त का विकल्प अभी तक नहीं खोजा जा सका है। रक्त की आवश्यकता पूरी करने के लिए रक्तदान ही एकमात्र उपाय है। इस दृष्टि से आपकी सेवाएँ अद्वितीय हैं। मीडिया प्रभारी दीपक कुमार के अनुसार इस शिविर में कुल 201 यूनिट रक्तदान हुआ।

सर्वाधिक रक्तदान कराने के लिए सम्मान

गायत्री परिवार के नवयुग दल टाटानगर को वॉलेण्टरी ब्लड डोनर्स एसोसिएशन झारखंड की ओर से वर्ष 2021-2022 में धार्मिक संगठनों में सर्वाधिक रक्तदान शिविर लगाने के लिए सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि इस अवधि में युवा प्रकोष्ठ द्वारा 4 शिविर लगाकर कुल 710 यूनिट रक्तदान कराया गया है। नवयुग दल टाटानगर ने 27 मार्च को अपना 48 वाँ रक्तदान शिविर सांकची में संपन्न किया था। इस समारोह में संस्था की ओर से रक्तदान शिविर के संयोजक संजीव सिन्हा, आर पी शर्मा, प्रशांत कालिंदी, राजन गुप्ता, खेत्रो मोहन, सरोज कुमार, मंजू मोदी, मीना देवी, संगीता महतो आदि ने सम्मान ग्रहण किया।

झारखण्ड में रक्तदान का महाअभियान चला रही सम्मानित टोली

बलि प्रथा उन्मूलन में शानदार सफलता मिली

अल्मोड़ा। उत्तराखंड

उत्तराखंड के सुप्रसिद्ध श्री गोलू देवता मंदिर, चितई में नवरात्र में पशुबलि की परंपरा लंबे समय से चली आ रही है। गायत्री परिवार की अल्मोड़ा शाखा इस परंपरा को समाप्त करने के लिए सन् 2002 से सक्रिय है। पिछले 20 वर्षों की सक्रियता से शानदार सफलता मिली है। जहाँ पहले 100-150 बकरों की बलि दी जाती थी, वहाँ अब मात्र 4 से 8 बकरों की ही बलि होती है।

बलि के लिए बकरे ले जाते लोगों को समझाती गायत्री परिवार की बहिनें

गायत्री प्रज्ञापीठ अल्मोड़ा के श्री भीम सिंह अधिकारी ने बताया कि गोलू देवता मंदिर में बलि प्रथा उन्मूलन के लिए गायत्री परिवार द्वारा वृहद स्तर पर संपर्क एवं जन जागरण अभियान चलाया जाता है। जो लोग बलि देने के लिए बकरों को लाते हैं, उन्हें समझा-बुझा कर बलि न देने के लिए सहमत किया जाता है। इस वर्ष भी चैत्र नवरात्रि में बलि हेतु लाए गए 32 बकरे गायत्री परिवार ने समझा कर लौटा दिए। बलि प्रथा रोकने के लिए माननीय उच्च न्यायालय का आदेश भी आया है, जिसके अनुपालन में गायत्री परिवार को पुलिस विभाग का शानदार सहयोग मिला। स्थानीय मीडिया ने भी प्रशंसनीय सहयोग दिया। परम पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित पुस्तक 'पशुबलि हिंदू धर्म पर कलंक' की हजारों प्रतियाँ निःशुल्क बाँटी गईं, रैलियाँ निकाली गईं। इसके साथ ही गोलू देवता मंदिर में यज्ञ, पूजा-प्रार्थना का क्रम चलता रहा। आगंतुक श्रद्धालुओं को बकरे की बलि के विकल्प के रूप में नारियल, फूल, फल, दूध से सात्विक पूजा करने का परामर्श दिया जाता रहा।

प्रभाव » पहले जहाँ 100-150 बकरों की बलि दी जाती थी, वहाँ गायत्री परिवार के प्रयासों से अब मात्र 4 से 8 बकरों की ही बलि होती है।

कन्या महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव में रक्तदान शिविर

104 यूनिट रक्तदान हुआ

सीसवाली, बाराँ। राजस्थान

माता भगवती देवी देव संस्कृति महिला कृषि एवं कला महाविद्यालय, सीसवाली का वार्षिकोत्सव 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ मनाया गया। मुख्य अतिथि श्री दीपक नन्दी, संभागीय आयुक्त कोटा ने इस अवसर पर गुरु-शिष्य परम्परा की महत्ता पर प्रकाश डाला। युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के प्रति अनन्य निष्ठा रखने वाले श्री नन्दी जी ने कहा कि जो सद्गुरु के बताए मार्ग पर चलता है वह अपने परिवार, समाज और राष्ट्र को सदा उन्नति के पथ पर अग्रसर करता जाता है।

महाविद्यालय संस्थापक श्री रामेश्वर नैनीवाल ने समारोह की अध्यक्षता की। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री जयराम मोटलानी, श्री दिलीप सिंह, गायत्री परिवार कोटा के श्री विष्णु मित्तल एवं क्षेत्रीय गणमान्य श्री शत्रुघ्न सिंह गुर्जर, डॉ. इन्द्र नारायण गुप्ता की प्रेरणादायी उपस्थिति थी।

वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में रक्तदान शिविर भी आयोजित किया गया, जिसमें कुल 104 यूनिट रक्तदान हुआ। सीसवाली व आसपास के गाँव से आए कई सेवाभावी लोगों ने रक्तदान कर अपनी सामाजिक निष्ठा का परिचय दिया।

अपने जिले को हराभरा बनाने का संकल्प

जहानाबाद। बिहार

प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ ने अपने नियमित रविवासरीय वृक्षारोपण अभियान में 3 अप्रैल के दिन मखदुमपुर थाना परिसर और आदर्श राजकीय माध्यमिक विद्यालय इक्किल के प्रांगण में वृक्षारोपण किया। थाना परिसर में वृक्षारोपण से पूर्व सहायक अपर निरीक्षक सिकन्दर कुमार ने पौधों का पूजन किया एवं कलावा बांधकर सुरक्षा का संकल्प लिया। थाना परिसर में गुलाब, नींबू, गुड़हल आदि के 21 पौधे रोपे गए। आदर्श राजकीय मध्य विद्यालय इक्किल में इसी प्रकार 15 पौधे रोपे गए। यह वृक्षारोपण कार्य जिला प्रभारी रंगेश कुमार के नेतृत्व में बचन देव कुमार, हरिजी, श्यामनारायण कुमार, कृष्णबल्लभ शर्मा, रंगनाथ शर्मा सहित थाना के सोनाली कुमारी, उदयगिरि, धीरज कुमार, मुकेश कुमार आदि के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

हरीतिमा संवर्धन के लिए रविवासरीय वृक्षारोपण अभियान में जुटे युवक

इससे पूर्व प्लस टू ओंकार प्रवेशिका विद्यालय केशरबाग खैरा के प्रांगण में वृहद पैमाने पर पौधरोपण किया गया। विद्यालय के प्रभारी अखतर आलम ने वृक्षारोपण अभियान का स्वागत करते हुए वर्तमान में वातावरण में निरंतर बढ़ते तापमान के लिए इसे नितांत आवश्यक कदम बताया। गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ की ओर से नागेन्द्र जी ने जहानाबाद जिले को हरा-भरा बनाने का संकल्प दोहराया और इस कार्य में सबके सहयोग का आह्वान किया।

नवरात्र में सेवा-संवेदनाओं का परिचय दिया

कामधेनु गौशाला का भूमिपूजन

अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ अलीराजपुर पर प्रस्तावित कामधेनु गौशाला के भूमिपूजन का कार्यक्रम हिन्दू नववर्ष गुड़ी पड़वा के शुभ अवसर पर किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पं. घनश्याम दास जी महाराज पंचमुखी हनुमान मंदिर तथा विशेष अतिथि श्री संजय गुप्ता सिविल कॉन्ट्रेक्टर, सम्मानीय अतिथि श्री रमेश सोमानी, वीरेंद्र गुप्ता, किशन राठौड़, ओमप्रकाश कोठारी ने अपनी शुभकामनाओं के साथ भूमिपूजन किया। उन्होंने गाय और गौशाला के धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व के बारे में अपने विचार भी व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन श्री संतोष वर्मा ने किया।

भूमिपूजन करते पं. घनश्यामदास एवं भवन का प्रारूप

पक्षियों के दाना-पानी के लिए पात्र बाँटे

खरगोन। मध्य प्रदेश

राम नवमी के पावन पर्व पर गायत्री शक्तिपीठ खरगोन में गायत्री महापुरश्चरण की सामूहिक पूर्णाहुति संपन्न हुई। नौ कुंडों पर 10 पारियों में लगभग 1000 साधकों ने पूर्णाहुति की।

इस अवसर पर पक्षियों हेतु दाना-पानी के लिए मिट्टी के पात्र वितरित किए गए। एसडीएम श्री मिलिंद ढोके ने आचार्य श्रीराम शर्मा के सिद्धांतों पर चलते हुए आचरण से शिक्षा देने की बात कही। युवा साधिका पूर्णिमा पंवार ने स्वार्थ का दायरा तोड़कर भगवान के विशाल संसार को श्रेष्ठ और समुन्नत बनाने का प्रयास करने की प्रेरणा दी।

ताप्ती तट पर सफाई और शंखनाद

मुलताई, बैतूल। मध्य प्रदेश

मुलताई शाखा ने हिंदू नव वर्ष के उपलक्ष्य में 2 अप्रैल को प्रातः ताप्ती आरती द्वार पर साफ-सफाई कर सूर्योदय के समय भगवान सूर्य नारायण का शंख ध्वनि के साथ स्वागत किया, 24 बार गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हुए ताप्ती सरोवर की परिक्रमा की गई, पौधारोपण किया गया। साथ ही गायत्री शक्तिपीठ में एक दिवसीय मौन अतःऊर्जा जागरण सत्र का आयोजन किया गया।

प्रोजेक्ट अपराजिता

21 कार्यक्रमों में 3000 बालिकाओं को वस्त्र, चप्पल और खाद्य सामग्री दी

हुगली। पश्चिम बंगाल

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता की 'अपराजिता' परियोजना का 21वाँ कार्यक्रम श्रीरामपुर के महेश फांडी क्षेत्र में स्थिति टीएनजी ईंट-भट्ठे के बच्चों के बीच आयोजित हुआ। इस बस्ती की 70 बालिकाओं को नए वस्त्र, चप्पल एवं खाद्य सामग्री प्रदान की गई।

अपराजिता परियोजना गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता की अभिनव सेवा योजना है, जिसके अन्तर्गत समर्थ महानुभावों के सहयोग से जरूरतमंद बालिकाओं को आगे बढ़ने का उत्साह प्रदान करते हुए उन्हें आवश्यक सहायता प्रदान की जाती है। परियोजना संयोजक श्री रवि शर्मा ने बताया कि विगत 21 कार्यक्रमों में वे 3000 से अधिक बालिकाओं को वस्त्र, चप्पल और खाद्य सामग्री प्रदान कर चुके हैं।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति जी का हिमाचल प्रदेश प्रवास

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 27 एवं 28 मार्च को हिमाचल प्रदेश के प्रवास पर पहुँचे। इस प्रवास में उनकी सहधर्मिणी श्रीमती शेफाली पण्ड्या भी साथ थीं। वे हिमाचल प्रदेश के पहले प्रांत स्तरीय गायत्री चेतना केंद्र का उद्घाटन करने पहुँचे थे, जो 28 मार्च को सम्पन्न हुआ। इससे पूर्व 27 मार्च को उन्होंने सिरमौर (नाहन) सोलन और वनखण्डी महादेव गायत्री शक्तिपीठ जिला सोलन में पहुँचकर कार्यकर्त्ताओं में गहन आत्मीयता का संचार किया।

महिला मण्डल द्वारा आयोजित संगोष्ठी

जिला सिरमौर नाहन में गायत्री परिजनों की एक गोष्ठी हुई। इसमें लगभग डेढ़ सौ परिजनों ने भाग लिया। गोष्ठी का आयोजन श्रीमती सुदेश अग्रवाल एवं उनकी साथी बहिनों ने किया आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने नारी सशक्तीकरण एवं शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयंती वर्ष की कार्य योजनाओं की जानकारी दी। कुछ परिजनों के यहाँ देवस्थापना एवं गंगाजली की स्थापना भी की गई।

अभिभूत हुए प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों ने शक्तिपीठ राजड़ी पर साधक प्रशिक्षण कक्ष का उद्घाटन भी किया।

27 मार्च की अपराह्न वनखंडी महादेव गायत्री शक्तिपीठ राजड़ी जाबली में आदरणीय डॉ. चिन्मय जी का उद्बोधन हुआ। प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. राजीव सहगल, ग्राम पंचायत जाबली की प्रधान श्रीमती कल्पना गर्ग, श्री देवदत्त अत्री, स्थानीय ट्रस्टीगण, शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री शालिग्राम अत्री, श्री देवेन्द्र गुप्ता, डॉ. बी.एम. शर्मा, श्री देवी रूप शर्मा एवं अनेक गणमान्य इस समारोह में उपस्थित थे। उपस्थित गणमान्यों ने आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का हिमाचली टोपी पहनाकर एवं शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया। श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी का स्वागत महिला मंडल राजड़ी-जाबली, छटेरा व गाँधी ग्राम की बहिनों ने किया।

डॉ. चिन्मय जी ने अपने उद्बोधन में जीवन साधना के सूत्रों की चर्चा की। जाबली शक्तिपीठ पर हुई दिव्यता से अभिभूत होकर उन्होंने क्षेत्र के विकास के लिए परियोजना तैयार करने का परामर्श भी कार्यकर्ताओं को दिया।

माननीय मंत्री डॉ. राजीव सहगल ने कहा कि उन्हें जीवन साधना के सूत्रों को कैसे अपनाया जाए, यह पहली बार समझ में आया है। उन्होंने हिमाचल आगमन पर प्रदेश की ओर से डॉ. चिन्मय जी को धन्यवाद ज्ञापित किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने माननीय मंत्री जी एवं उपस्थित विशिष्ट जनों को गंगाजली एवं देवस्थापना चित्र भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का समापन श्री देवीरूप शर्मा द्वारा आभार ज्ञापन के साथ हुआ।

गायत्री चेतना केन्द्र के लोकार्पण समारोह में आयोजित सभा को संबोधित करते आदरणीय डॉ. चिन्मय जी व श्रीमती शैफाली जी

गायत्री चेतना केन्द्र, शिमला का लोकार्पण

प्रान्तीय सक्रियता का केन्द्र होगा यह चेतना केन्द्र

28 मार्च को गायत्री चेतना केन्द्र शिमला के उद्घाटन समारोह में प्रदेश के प्रायः सभी जिलों के कार्यकर्त्ता तथा गुशान गाँव के प्रधान और गाँव वासियों सहित लगभग 400 श्रद्धालु उपस्थित थे। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने समाज के नवनिर्माण में केन्द्र की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हम नए युग में प्रवेश कर रहे हैं, जिसमें हमारी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। आज सतयुगी परिस्थितियों का निर्माण करने के लिए समाज की विचारधारा को बदलने की आवश्यकता है। उन्होंने माता गायत्री की उपासना से विवेक और आत्मबल जाग्रत् करने और परम पूज्य गुरुदेव से प्रेरणा व शक्ति अनुदान पाने के लिए उनके साहित्य का स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी।

गुशान गाँव के प्रधान और ग्राम वासी पहली बार गायत्री परिवार के किसी कार्यक्रम में भाग ले रहे थे। उन्होंने आश्वासन दिया कि वह गायत्री चेतना केंद्र के कार्यों में अपना अधिक से अधिक योगदान देंगे। उन्होंने इसका शुभारंभ अपना अंशदान देकर किया।

गद्गद हुए कार्यकर्त्ता

• गायत्री चेतना केन्द्र शिमला सबके सहयोग से विनिर्मित हिमाचल प्रदेश की एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थापना है। परिजनों का मन था कि उनकी श्रद्धा से सिंचित इस गायत्री चेतना केन्द्र का उद्घाटन आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी करें। अपनी मनोकामना पूरी होने पर सभी अत्यंत प्रफुल्लित थे।

डॉ. चिन्मय जी चेतना केन्द्र के शिलापट्ट का अनावरण करते हुए

• उपस्थित अधिकांश हिमाचल वासियों का डॉ. चिन्मय जी के साथ यह पहला सम्पर्क था। उनके सरल स्वभाव, गहन अध्ययन और युग निर्माण आन्दोलन के प्रति निष्ठा ने सभी के मन-मस्तिष्क पर गहरी छाप छोड़ी।

प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन :

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने शिमला में प्रबुद्धजनों की एक विशाल सभा को भी सम्बोधित किया। उन्होंने वातावरण एवं जनमानस में व्याप्त विषाक्तता के शमन के लिए युगऋषि की युग निर्माण योजना से जुड़ने और श्रेष्ठ समाज के निर्माण में भागीदारी करने का आह्वान किया।

सिरमौर (नाहन) में बहिनों की संगोष्ठी

शक्तिपीठ राजड़ी की सभा को सम्बोधन

हिमाचल की राजधानी शिमला में प्रबुद्ध जनसभा को सम्बोधन

प्रशिक्षण शिविर में 3000 युवक-युवतियों को दिखाई जीने की राह

सांवरी बाजार, छिंदवाड़ा। मध्य प्रदेश

सांवरी बाजार, विकासखंड मोहखेड़ में 22 से 24 मार्च 2022 की तिथियों में युवा प्रशिक्षण शिविर एवं गुरुकुल के शुभारंभ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसमें 3000 युवक-युवतियों ने भाग लिया। 23 मार्च को आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति देव संस्कृति विश्वविद्यालय के शिविर में पहुँचने से आयोजक और प्रतिभागियों का उत्साह कई गुना बढ़ गया। डॉ. चिन्मय जी ने मंत्रमुग्ध कर देने वाले अपने उद्बोधन में युवाओं के समक्ष उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने की संभावनाओं का विश्लेषण किया। उन्होंने कहा कि नरपशु-नरपिशाचों जैसा जीवन तो अनन्त लोग जीते हैं। मानव जीवन की गरिमा इसमें है कि विवेकानन्द, भगत सिंह, आजाद, बिस्मिल की तरह लोकमंगल के लिए जिया जाय, स्वयं आनन्दपूर्ण जीवन जीते हुए अनेकों के जीवन को प्रकाशित किया जाये।

■ आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने सांवरी बाजार में गायत्री परिवार को दान में मिली 13 एकड़ जमीन पर गुरुकुल का शुभारंभ भी किया।

■ विधायक श्री सोहन बाल्मीकि जी ने गायत्री परिवार को 2 एकड़ जमीन दान देने तथा 108 कुंडीय यज्ञ कराने की घोषणा की।

डॉ. चिन्मय जी युग साहित्य भेंटकर विधायक महोदय का अभिनन्दन करते हुए

सांवरी बाजार पहुँचने पर पांढुरना के विधायक श्री नीलेश उइके, सौंसर के विधायक श्री विजय चौरे और परासिया के विधायक श्री सोहन बाल्मीकि ने आदरणीय डॉ. चिन्मय जी का भावभरा स्वागत किया। श्री सोहन बाल्मीकि जी ने शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि की प्रेरणाओं से प्रभावित होकर 2 एकड़ जमीन गायत्री परिवार को दान देने तथा सितंबर में पुनः 108 कुंडीय यज्ञ एवं श्रीमद् प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजन कराने की घोषणा की।

शान्तिकुञ्ज से पहुँची श्री सूरत सिंह अमृते की टोली और उपजोन प्रभारी श्री दीपक मालवीय ने प्रशिक्षण अभिभूत हो गए। उल्लेखनीय है कि श्री सदन साहू, भाजपा मंडल के अध्यक्ष ने यज्ञशाला निर्माण के लिए दो लाख रुपयों का अनुदान देने की घोषणा की।

बीसापुर कलाँ में भूमिपूजन

सांवरी बाजार पहुँने पर आदरणीय डॉ. चिन्मय जी सर्वप्रथम शान्तिकुञ्ज के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री सूरत सिंह अमृते के घर गए, कोरोना से दिवंगत हुए उनके चाचाजी को श्रद्धाञ्जलि दी। तत्पश्चात् उनकी जन्मभूमि ग्राम बीसापुर कलाँ भी गए। वहाँ गायत्री ज्ञान मंदिर में यज्ञशाला निर्माण के लिए भूमि पूजन, तत्पश्चात् वृक्षारोपण किया। गाँववासी उनका आत्मीयतापूर्ण उद्बोधन सुनकर

बीसापुर कलाँ के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं के साथ आत्मीयता और उल्लास के क्षण

दिया। शिविर में शामिल लगभग 80 युवाओं ने सप्ताह में एक दिन का समयदान देकर क्षेत्र के 45 गाँवों में चल रही बाल संस्कार शालाओं में सहयोग देने की घोषणा की।

प्रशिक्षण शिविर की सफलता में क्षेत्र के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री रामदास पंवार, जयराम शेरके, संतोष कड़वे, ऋषि सोनी, नीरज सूर्यवंशी, अशोक देशमुख, राहुल देशमुख, सब इंजीनियर श्री एलके विश्वकर्मा आदि कर्मठ कार्यकर्त्ताओं का प्रमुख योगदान रहा।

युग चेतना विस्तार से अनुप्राणित हो रहा है समाज

प्रगति पर है जिले के हर गाँव तक गायत्री परिवार को पहुँचाने की योजना

गरियाबन्द। छत्तीसगढ़

गरियाबन्द जिले के प्राणवान कार्यकर्त्ताओं ने अपने सम्पूर्ण जिले को गायत्रीमय बनाने का संकल्प लिया है। इसी संकल्प के अन्तर्गत दिनांक 26, 27 एवं 28 मार्च को छुरा ब्लॉक के 65 ग्रामों में ग्राम तीर्थ प्रव्रज्या दीपयज्ञ आयोजित हुए। ये गाँव ब्लॉक के सुदूर वनांचल के उन 80 गाँवों में से थे, जिनमें गायत्री परिवार की सक्रियता नहीं है।

जिला समन्वयक टीकम राम साहू ने बताया कि महुआ का मौसम होने के बावजूद इन दीपयज्ञों में लोगों की भारी उपस्थिति उत्साहवर्धक थी। सरपंच से लेकर गाँव के गणमान्यों में मिशन के प्रति श्रद्धा का भाव देखा गया। घर-घर गंगाजल एवं देवस्थापनाएँ हुईं। 70 बहिनों के पुंसवन संस्कार हुए। स्थानीय कार्यकर्त्ताओं के समूह बनाकर शेष 15 गाँवों में भी इस प्रकार के दीपयज्ञ आयोजित करने की व्यवस्था बनाई गई। सभी गाँवों में नियमित सक्रियता बनी रहे, ऐसे प्रयास किए जा रहे हैं। बालोद, भिलाई, बलोदा बाजार गरियाबंद जिले से भाई-बहिनों की टोलियों ने इन कार्यक्रमों को सम्पन्न कराया।

श्री टीकम साहू एवं उनके प्रमुख सहयोगी लगभग 100 कार्यकर्त्ताओं ने जिले के पाँचों ब्लॉक में मिशन की सक्रियता से अछूते रहे गाँवों में इस प्रकार के दीपयज्ञ आयोजित करने की योजना बनाई है। सबके सामूहिक प्रयासों से पूरे जिले को गायत्रीमय कर देने की योजना है।

700 कार्यकर्त्ताओं का सम्मान समारोह

बिलासपुर। छत्तीसगढ़

शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में गायत्री शक्तिपीठ बिलासपुर पर 20 मार्च 2022 को कार्यकर्त्ता सम्मेलन का आयोजन हुआ। श्री सी.पी. सिंह के अनुसार जिला, ब्लॉक स्तरीय संगठनों के समन्वयक-सहयोगी, शक्तिपीठों/प्रज्ञापीठों के व्यवस्थापक से लेकर प्रज्ञा मण्डल, महिला मण्डल, युवा मण्डल के कार्यवाहक आदि समस्त सक्रिय एवं पुराने कार्यकर्त्ताओं को इसमें आमंत्रित किया गया। युग चेतना के विस्तार में सबकी भावभरी सेवाओं का स्मरण करते हुए लगभग 700 कार्यकर्त्ताओं को प्रमाण पत्र एवं युग साहित्य प्रदान करते हुए सम्मानित किया गया। वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने सभी से रक्त का एक-एक कण और समय का एक-एक क्षण को परम पूज्य गुरुदेव के लक्ष्य-धरती पर स्वर्ग के अवतरण के लिए अर्पित कर जीवन को सफल बनाने की प्रेरणा दी।

40 दिवसीय ज्ञानयज्ञ अनुष्ठान

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश

परम पूज्य गुरुदेव ने विचार क्रान्ति और ज्ञानयज्ञ को इस युग की सबसे बड़ी आवश्यकता बताया है। उन्होंने कहा है, ''हमें ज्ञानयज्ञ और विचारक्रान्ति को ही इस युग की सर्वोपरि आवश्यकता और समस्त विकृतियों की एकमात्र चिकित्सा मानकर चलना चाहिए।''

पूज्य गुरुदेव के इन्हीं विचारों को अपने जीवन का लक्ष्य मानकर सक्रिय गायत्री ज्ञानयज्ञ शाखा प्रयागराज ने 22 मार्च से 30 अप्रैल तक 40 दिनों के ज्ञानयज्ञ अनुष्ठान का व्रत लिया है। इसके अंतर्गत वे प्रातःकाल भ्रमण के लिए निकलने वाले लोगों को अपने मिशन का साहित्य निःशुल्क देते हैं।

शाखा संयोजक श्री देवब्रत साहा राय ने बताया कि उनकी टोली प्रातः 5 से 7 बजे तक प्रयागराज के 30 किलोमीटर क्षेत्र में साहित्य बाँटने निकलती है। अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना व प्रज्ञा अभियान पत्रिकाएँ, जन्मशताब्दी पुस्तक माला, प्रज्ञा लघु पुस्तकमाला, बाल निर्माण की कहानियाँ, गायत्री मंत्रलेखन जैसी अनेक पुस्तकें प्रतिदिन लगभग 500-600 लोगों को दी जाती हैं। संगम, मिण्टो पार्क, बक्शी बाँध, कम्पनी गार्डन, मनकामेश्वर मंदिर, खुशरोबाग, झूँसी, नैनी, प्रीतमनगर, सूबेदार गंज में साहित्य बाँटा जा रहा है। सर्वश्री अवधेश सिंह, शेषनाथ श्रीवास्तव, प्रेमसिंह, सरयू प्रसाद विश्वकर्मा, रामदेव यादव, जगतपाल गुप्ता आदि की इस ज्ञानयज्ञ में प्रमुख भूमिका है।

गायत्री मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा समारोह

बिलासपुर। छत्तीसगढ़

ग्राम पोड़ी (नरगोड़ा), विकास खण्ड मस्तूरी में गायत्री मंदिर का भव्य निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ। दिनांक 26 मार्च 2022 से 28 मार्च 2022 तक आयोजित नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं संगीतमय पावन प्रज्ञा पुराण कथा के साथ इसकी प्राण प्रतिष्ठा की गई।

शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में छत्तीसगढ़ में सक्रिय श्रीमती पुनिता कश्यप, श्रीमती उषा साहू, टोली नायक श्री घनश्याम साहू की विशेष टोली ने यह कार्यक्रम सम्पन्न कराया। बहिनों द्वारा अन्नपूर्णा देवी–भोले बाबा मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा भी कराई गई।

शानदार उपलब्धियाँ

संस्कार परम्परा के पुनर्जीवन में भी जबरदस्त सफलता मिली। बड़ी संख्या में दीक्षा, 20 मुण्डन, एक जोड़े का विवाह सहित विभिन्न संस्कार सम्पन्न हुए। क्षेत्र के विधायक डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी ने मंदिर के दर्शन कर क्षेत्रीय सुख-शान्ति एवं प्रगति की प्रार्थना की।

गायत्री मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के साथ 40 सदस्यीय युवा मण्डल, 30 सदस्यीय महिला मण्डल और 25 सदस्यीय प्रज्ञा मण्डल का गठन हुआ। दो वर्ष तक सतत समयदान-अंशदान कर मंदिर निर्माण कराने वाले स्वयंसेवकों के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए 'सत्कार्यों का अभिनंदन' समारोह रखा गया, इसमें तीज राम साहू, पंचराम धीवर, धनसाय बैगा, दिलीप साहू आदि समस्त सहयोगियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

ग्राम पोड़ी मुण्डन संस्कार कराती टोली

24 कुण्डीय यज्ञ-प्रज्ञापुराण कथा

समयदान के प्रशंसनीय संकल्प उभरे

निवाड़ी। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ प्रांगण में 25 मार्च से 28 मार्च 2022 की तिथियों में 24 कुंडी गायत्री महायज्ञ एवं श्रीमद् प्रज्ञा पुराण कथा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसे संपन्न कराने के लिए शान्तिकुञ्ज से श्री सूरत सिंह अमृते की टोली पहुँची थी। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों ने घर-संसार में स्वर्ग की सृष्टि के लिए मनःस्थिति बदलने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि गायत्री उपासना और युगऋषि के साहित्य का स्वाध्याय वह संजीवनी है जिसने करोड़ों लोगों का जीवन बदला है।

कार्यक्रम की शानदार उपलब्धियाँ रहीं। लोगों में समाज के लिए समर्पित होने का उत्साह जगा। श्रीमती कृष्णा व्यास एवं श्रीमती कमला गुप्ता ने बच्चों के स्वावलंबन प्रशिक्षण हेतु दो कमरे बनाने के लिए अनुदान दिया। लोकमंगल के कार्यों के लिए 42 भाई-बहनों ने 2 से 3 माह का समयदान और 10 भाइयों ने शक्तिपीठ के लिए जीवनदान का संकल्प लिया। युवा पीढ़ी को नशे के दुष्प्रभाव से बचाने के लिए दिया गया तर्क-तथ्यपूर्ण उद्बोधन अत्यंत प्रभावशाली था, जिसे सुनकर अनेक लोगों ने नशामुक्त जीवन जीने के संकल्प लिए।

आयोजन में गायत्री शक्तिपीठ निवाड़ी के समर्पित कार्यकर्त्ता डॉ. आनंद खरे, विवेक डांगी, बृजेश गुप्ता (टीटू सेठ), श्रीमती अंजना, श्रद्धा, आलोक मोदी, राजुल शेखर एडवोकेट, विनीत रेजा (टीचर) आदि की विशेष भूमिका रही।

निवाड़ी में यज्ञ संचालन करते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

कर्मकांड हमारा लोक शिक्षण का सहारा

आद. श्री मृत्युंजय शर्मा जी विमोचन करते हुए

पुस्तक का विमोचन

मथुरा : दिनांक 10 अप्रैल 2022, रामनवमी के दिन गायत्री तपोभूमि मथुरा के सभागार में हजारों गायत्री साधकों की उपस्थिति में गायत्री शक्तिपीठ कुम्हेर, जिला भरतपुर (राजस्थान) के व्यवस्थापक श्री श्यामसुन्दर शर्मा की लिखी पुस्तक 'कर्मकांड हमारा लोक शिक्षण का सहारा' का विमोचन हुआ। आदरणीय श्री मृत्युंजय शर्मा जी ने अपनी सहधर्मिणी एवं युग निर्माण योजना के संपादक श्री ईश्वर चंद पांडे के साथ पुस्तक का विमोचन किया। उल्लेखनीय है कि पुस्तक के लेखक श्री श्याम सुंदर शर्मा पूरे क्षेत्र के लिए एक आदर्श स्वयंसेवक हैं, जो आज 80 वर्ष की उम्र में भी साईकिल से यात्राएँ करते हुए लगभग हर दिन सार्वजनिक कार्यक्रमों का संचालन करते हुए जनजागरण अभियान चला रहे हैं। वे प्रज्ञापुराण कथाओं के माध्यम से मनोविनोदपूर्ण लोकशिक्षण के लिए विख्यात् हैं। प्रस्तुत पुस्तक उनके अनुभव एवं प्रयोगों से ओतप्रोत है।

साधना कक्ष का लोकार्पण, सत्कार्यों का अभिनन्दन

हटा, दमोह। मध्य प्रदेश

ग्राम तेवरैया में दमोह जिले की त्रैमासिक बैठक हुई। इसमें जिले के सभी विकास खंडों के 24 गाँव से आए सैकड़ों परिजनों ने भाग लिया। नियमित कार्यों की समीक्षा और भावी सक्रियता की प्रेरणा का क्रम रहा। डॉ. रामकृष्ण कुसमरिया, डॉ. विजय सिंह राजपूत, पी.एल. तंतुवाय, विधायक हटा उमादेवी खटीक, पूर्व विधायक जिला पंचायत अध्यक्ष शिवचरण पटेल, चंद्रभान पटेल ने प्रज्ञा पीठ में नवनिर्मित साधना कक्ष का लोकार्पण किया। भूमि दान दाता पं. गोविंद दुबे, 100 गाँवों में दीवार लेखन का संकल्प करने वाले पेंटर नारायण प्रजापति, सवा लाख रुपये की नगद राशि प्रदान करने वाले ललिता प्रसाद दुबे का सम्मान किया गया। डॉ. गोपाल कुसमरिया द्वारा युग निर्माण योजना गायत्री साधना विशेषांक की निःशुल्क प्रतियाँ वितरित की गईं।

प्रथम कार्यक्रम, दर्शनीय उत्साह

पुंसवन संस्कार कराती बहिनें और मंच पर उपस्थित विधायक-गणमान्य

अरमरीकला, बालोद। छत्तीसगढ़

ग्राम अरमरीकला में 27 व 28 मार्च को पहली बार 9 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा का कार्यक्रम हुआ। इसमें पूर्व विधायक श्री हर्षद मेहता एवं संजारी, बालोद की विधायक श्रीमती संगीता सिन्हा ने भी भाग लिया। उन्होंने गायत्री परिवार की गतिविधियों की सराहना की। श्रीमती संगीता सिन्हा ने गायत्री मंदिर प्रांगण में बोर खनन एवं मंदिर के पीछे पचरी निर्माण कराने एवं गायत्री परिवार को एक सामुदायिक भवन देने की घोषणा की।

दूसरे दिन 12 गर्भ संस्कार, 5 अन्नप्राशन संस्कार, 32 मुण्डन संस्कार, 39 विद्यारंभ संस्कार एवं 31 दीक्षा संस्कार हुए। शान्तिकुञ्ज से पहुँची श्री रमेश साहू एवं श्री खिलावन सिन्हा की टोली ने कार्यक्रम सम्पन्न कराया। प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ से श्री चम्पेश्वर साहू ने संचालन किया। स्वयं सहायता समूह की बहिनें एवं आसपास के गाँवों से बड़ी संख्या में परिजनों ने यज्ञ में भाग लिया। गायत्री महिला मंडल की बहिनों का विशेष सहयोग रहा।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का ऑनलाइन आयोजन

जमशेदपुर। झारखण्ड : कोरोनाकाल के कारण जमशेदपुर में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का ऑनलाइन आयोजन हुआ, जिसमें नगर के 30,000 विद्यार्थियों ने भाग लिया। जिले में ऑनलाइन परीक्षा को सफलता पूर्वक सम्पन्न कराने मे टाटानगर के श्री महेंद्र प्रसाद, श्री एस एन प्रसाद एवं कोल्हान भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के संयोजक श्री उदय प्रताप लाल का सराहनीय योगदान रहा।

भासंज्ञाप. परिचय अभियान

अमरावती। महाराष्ट्र

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के परिचय के लिए स्थानीय युवा संगठन ने चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया। 50 विद्यार्थियों ने भाग लिया, सभी को प्रमाण पत्र एवं मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ प्रदान कर प्रोत्साहित किया गया। अग्रणी रहे विद्यार्थियों को नकद पुरस्कार भी दिए गए।

सनातन संस्कृति की गौरवशाली परम्पराओं के साथ हुआ नववर्ष का स्वागत

कमल सरोवर पर सामूहिक सूर्य अर्घ्यदान एवं सूर्य नमस्कार

उज्जैन। मध्य प्रदेश

कुम्भ नगरी उज्जैन में अनेक संस्थाओं ने मिलकर अपनी गौरवशाली परम्पराओं के साथ भारतीय नववर्ष का स्वागत किया। नगर के कमल सरोवर के किनारे उदित हुए भगवान भास्कर को सूर्य अर्घ्यदान करते हुए सैकड़ों लोगों ने भारतीय संस्कृति के उत्थान और मानवमात्र के कल्याण की प्रार्थना की। नारी सशक्तीकरण वर्ष के परिप्रेक्ष्य में सभी कार्यक्रमों का संचालन बहिनों की टोली ने ही किया।

अनेक संगठनों की भागीदारी

नववर्ष स्वागत समारोह में विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अखिलेश पांडेय, गायत्री परिवार उज्जैन के उपजोन समन्वयक श्री राजेश पटेल सहित संस्कार भारती, द इनीशिएटिव सोसाइटी, लायंस क्लब के वरिष्ठ जनों एवं कई गणमान्यों ने भाग लिया।

- मांगलिक ध्वनि, मंगल गीत गान, नगाड़ा वादन जैसे कार्यक्रम अपनी महान परम्पराओं के प्रति गौरव का भाव जगाते रहे।
- करीब एक हजार लोगों को मंगल तिलक लगाकर नीम-मिश्री का सेवन कराया गया।
- चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को उज्जैन नगरी के गौरव दिवस के रूप में भी मनाया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ श्री सुरेन्द्र स्वर्णकार के बांसुरी वादन से हुआ। वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी की आवाज में किए गए 12 बार गायत्री महामंत्र के उच्चारण ने वातावरण को दिव्यता प्रदान की। तत्पश्चात भगवान कमल सरोवर पर लगभग 350 लोगों ने एक साथ

विनयानवत होकर कमल सरोवर पर अर्घ्यदान किया। योग केन्द्र विक्रम विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा सामूहिक सूर्य नमस्कार का प्रदर्शन किया गया। उत्कृष्ट एवं नवीन कन्या छात्रावास की छात्राओं ने शुभकामना गीत गाया। कार्यक्रम का संयोजन संस्कार भारती के श्री संतोष व्यास एवं गायत्री परिवार के श्री देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव ने किया।

घर के द्वारों पर ॐ और स्वस्तिक बनाए

मंदसौर। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार द्वारा संचालित गोशाला चौबीसा मगरा की ओर से गाँव खात्याखेड़ी में श्री शंकरलाल मालवीय के मार्गदर्शन में कुछ अनोखे अंदाज में हिंदू नववर्ष मनाया गया। सभी घरों के द्वार पर सनातन धर्म व भारतीय संस्कृति के प्रतीक चिन्ह ॐ और स्वस्तिक बनाए गए। शान्तिकुञ्ज के निर्देशानुसार प्रातः काल गाँव के मुख्य मंदिर पर गायत्री परिजनों के साथ गाँव वालों ने गायत्री मंत्र और महामृत्युंजय मंत्र का सामूहिक जप किया, शंखनाद और सूर्य

अर्घ्यदान के साथ सभी के कल्याण की मंगल कामना की गई। शाम को घर-घर दीप मालाएँ सजाई गईं। नवरात्रि का पहला दिन होने पर घर-घर में सायं 6 से 8 बजे के बीच सामूहिक गायत्री मंत्र व महामृत्युंजय मंत्र का जप किया गया।

दीपयज्ञ के मनमोहक समारोह

लखीमपुर खीरी। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ लखीमपुर खीरी ने मोहल्ला पटेल नगर स्थित सदर विधायक कैम्प कार्यालय परिसर में सामूहिक सूक्ष्म यज्ञ के साथ भारतीय संस्कृति का स्वागत किया। सदर विधायक श्री योगेश वर्मा भी इस अवसर पर उपस्थित थे। सबने मिलकर सबके कल्याण की कामना के साथ यज्ञाहुतियाँ समर्पित की और भारत माता की आरती उतारी।

24 वेदीय सामूहिक सूक्ष्म यज्ञ का अयोजन मोहल्ला महाराज नगर में हुआ, जिसमें बरनवाल नवयुवक संघ से जुड़ी बहिनों ने भाग लिया।

दोनों ही कार्यक्रम भारतीय संस्कृति के गौरव की अनुभूति कराने वाले

तथा अपने दैनंदिन जीवन में यज्ञ को शामिल करने की प्रेरणा देने वाले थे। इन्हें सूक्ष्म यज्ञ प्रशिक्षण कार्यक्रम के रूप में भी आयोजित किया गया था। गौसंरक्षण, गौसेवा एवं गौ संवर्धन की प्रेरणा दी गई। अजय वर्मा, अंकित कुमार, शैलेश बरनवाल, कुलदीप वर्मा, अनुराम मौर्य आदि युवाओं की टोली ने इनका आयोजन और संचालन किया।

नवरात्र काल में सूक्ष्म यज्ञ प्रार्थना एवं प्रशिक्षण के कार्यक्रम चलते रहे। 4 अप्रैल को दिन रमियाबेहड़ ब्लॉक के गाँव लबेदपुर स्थित गायत्री शक्तिपीठ पर हुए कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

सामाजिक एकता-समरसता की प्रेरणा और प्रार्थना

जयपुर। राजस्थान

महिंद्रा वर्ल्ड सिटी से जुड़े कलवाड़ा ग्राम में नववर्ष का स्वागत सामूहिक सूर्यार्घ्य से हुआ। गायत्री परिवार की प्रेरणा से गाँव के युवाओं, महिलाओं और बच्चों सहित हर वर्ग के लोगों ने अपनी संस्कृति के अनुरूप सूर्य उपासना एवं सूर्य अर्घ्य के साथ नववर्ष में भगवान भास्कर की प्रथम रश्मियों का स्वागत-वन्दन किया। कार्यक्रम संयोजक गायत्री परिवार के युवा प्रतिनिधि श्री संदीप त्रिपाठी ने बताया कि सूर्य प्रत्यक्ष देवता हैं। जैसे वे बिना किसी भेदभाव के सभी को प्राणऊर्जा, प्रखरता प्रदान करते हैं, हम सब को भी उसी सिद्धान्त को अपनाकर सामाजिक भेदभाव समाप्त करने हेतु प्रयास करना चाहिए। यह सूर्य भगवान की सच्ची उपासना है।

चैत्र नवरात्र के दिनों में अपनाई गई विशिष्ट सक्रियता

गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना अभियान

322 घरों में यज्ञ कराए

अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

अलीराजपुर के जिला संगठन ने रामनवमी-10 अप्रैल के दिन गृहे-गृहे गायत्री उपासना-यज्ञ अभियान को शानदार गति देते हुए पूरे जिले में एक ही दिन कुल 322 घरों में यज्ञ कराए। अलीराजपुर एवं छकतला में 78-78 और जोबट में 52 घरों में यज्ञ हुए। शेष यज्ञ नानपुर, बोरी, भाबरा, कट्ठीवाड़ा एवं सोंडवा में हुए। इन यज्ञों में सैकड़ों साधकों ने अपने नवरात्र साधना अनुष्ठान की पूर्णाहुति की।

सतत चल रहा है अभियान

जिला समन्वयक श्री संतोष वर्मा ने बताया कि गृहे-गृहे यज्ञ अभियान अलीराजपुर जिले का नियमित अभियान है। प्रायः प्रत्येक रविवार को घर-घर यज्ञ किए जाते हैं।

कोरोना योद्धाओं का सम्मान

मुलताई, बैतूल। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ मुलताई में महाअष्टमी के दिन पंच कुंडी गायत्री महायज्ञ के साथ माँ आद्यशक्ति गायत्री की महाआरती की गई। इस अवसर पर कोरोना काल में जरूरतमंद लोगों की सेवा में संलग्न रहे गायत्री परिवार के परिजनों का सम्मान किया गया। उपजोन समन्वयक श्री दीपचंद मालवीय ने उन्हें सनातन संस्कृति के सच्चे संवाहक बताया। कोरोना योद्धा के रूप में शासकीय चिकित्सालय मुलताई से स्वच्छता प्रभारी विमला देव्हारे, सुनीता डोंगरदिये, दीपमाला वानखेड़े, सिंधुताई देवगड़े, नगर पालिका के स्वच्छता प्रभारी महेश चावरिया, गणेश बड़ौदे, सारिका घोगले, वर्षा सोनटके, श्याम भाई सैंदरे, राकेश मोगरे, दुर्गेश सेंदरे, उप जेल के संतरी रितेश ठाकुर तथा मुलताई के पत्रकारों का सम्मान किया गया।

अखिल विश्व गायत्री परिवार की चित्तौड़गढ़ शाखा के प्रयासों से 73 वर्षों के बाद

पाक अधिकृति कश्मीर की शारदा शक्तिपीठ में हुई पूजा

चित्तौड़गढ़। राजस्थान

भारत की प्राचीन शक्तिपीठों में नवरात्र साधना पर्व बड़ी श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाता है। लेकिन पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में स्थित एक 'शारदा शक्तिपीठ' ऐसी है जहाँ पिछले 73 वर्षों से पूजा-अर्चना नहीं हो पा रही है। लेकिन अखिल विश्व गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ चित्तौड़गढ़ के प्रयासों से इस चैत्र नवरात्र में इस शक्तिपीठ पर प्रतीक मात्र ही सही, पूजा-प्रार्थना का क्रम आरम्भ करने में सफलता मिली।

शारदा शक्तिपीठ एक गुमनाम शक्तिपीठ है, जिसके बारे में अधिकांश भारतीयों को तो पता भी नहीं है। लेकिन फिल्म 'द कश्मीर फाइल्स' से इसकी जानकारी प्राप्त करने के बाद अखिल विश्व गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ चित्तौड़गढ़ ने इस नवरात्रि में वहाँ ऑनलाइन पूजन करने का प्रयास किया तो सफलता भी मिली। 'सेव शारदा कमेटी कश्मीर' के प्रमुख श्री रविन्द्र पंडित के मार्ग दर्शन में पाक अधिकृत कश्मीर के निवासियों से संपर्क किया। कुछ लोगों के सहयोग से वहाँ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन माता रानी को धूप अगरबत्ती, प्रसाद, पंचमेवा, फल आदि अर्पित करते हुए पूजा की गई। माता शारदा को नोटबुक एवं पेन अर्पित कर उन्हें छोटी-छोटी कन्याओं में वितरित कर दिया गया। माता शारदा से पुनः नीलम घाटी में ज्ञान की गंगा बहाने एवं शांति स्थापित कर शक्तिपीठ के

माँ शारदा शक्तिपीठ के खंडहर अवशेष और ऑनलाइन कर्मकाण्ड के साथ पूजन करते स्थानीय परिजन

सदियों पुराने वैभव की स्थापना करने की प्रार्थना की गई। गायत्री परिवार चित्तौड़गढ़ से चंद्रशेखर चंगेरिया, भरत सोनी, एकता शर्मा, प्रकाश कुमावत, दिलीप लोढा, हर्षित जीनगर, राजेश साहू, सोनू वैष्णव, हितेश नाहर एवं मांडलगढ़ भीलवाड़ा से ऋषि कुमावत द्वारा किए गए सांस्कृतिक चेतना के पुनर्जीवन के प्रयास सफल हुए।

सम्मान : रामनवमी के दिन लघु अनुष्ठान करने वाले 50 से अधिक परिजनों ने पूर्णाहुति की। इस अवसर पर शारदा पीठ में पूजा की पहल करने वाले श्री चंद्रशेखर चंगेरिया एवं इनके पिता श्री अमृत लाल चंगेरिया का अभिनंदन किया गया।

भावभरी श्रद्धांजलि

खिलचीपुर, राजगढ़। मध्य प्रदेश

वयोवृद्ध समर्पित कार्यकर्त्ता पं. दीनानाथ कौशिक का 14 मार्च 2022 को 80 वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। वे सन् 1982 से मिशन की सेवा कर रहे थे। गुरुसत्ता उनकी आत्मा को शान्ति-सद्गति प्रदान करे, ऐसी प्रार्थना।

ज्ञानरथ का लोकार्पण

बण्डा, शाहजहाँपुर। उत्तर प्रदेश : रामनवमी के पावन अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ ब्रह्म स्थली बंडा में नए ज्ञानरथ का लोकार्पण हुआ। इसे कानपुर के समर्पित कार्यकर्त्ता प्रख्यात हड्डी रोग सर्जन डॉ. अमरनाथ सारस्वत ने भेंट किया है।

बरघाट, सिवनी। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्ति पीठ में रामनवमी के दिन पाँच कुंडीय यज्ञ हुआ। श्रद्धालुओं को भगवान राम के आदर्श पर चलने और पवन पुत्र हनुमान जी की गति से युग निर्माण आन्दोलन में सक्रिय होने की प्रेरणा दी गई। बड़ी संख्या में संस्कार हुए।

हर माँ का अरमान, सद्गुणी-संस्कारवान संतान

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान की बढ़ती लोकप्रियता

नई पहल — **गर्भ धारण से पूर्व दम्पतियों के प्रशिक्षण से लेकर शिशु के विकास के हर कदम पर प्रेरणा, प्रशिक्षण एवं संस्कार की अनूठी योजना**

मोडासा, अरवल्ली। गुजरात

गायत्री चेतना केन्द्र, मोडासा संस्कारवान पीढ़ी के निर्माण की एक अनूठी योजना पर पिछले चार वर्षों से काम कर रहा है और उसे शानदार सफलता भी मिल रही है। इसके अन्तर्गत शिशु की चाह रखने वाले दम्पतियों का गर्भ धारण से पूर्व शिविर आयोजित होता है। इस शिविर में श्रेष्ठ-संस्कारवान संतान को गढ़ने के लिए आवश्यक मनोभूमि तैयार की जाती है। दिनचर्या में सात्विकता, स्वाध्याय, स्वास्थ्यवर्धक योग, आहार जैसे उपक्रमों के समावेश सम्बन्धी मार्गदर्शन दिया जाता है।

चेतना केन्द्र पर संतान की चाह के इच्छुक दम्पतियों का शिविर

यह संस्कारवान संतान के निर्माण की प्रक्रिया का शुभारम्भ है जो शिशु के जन्म से भी आगे नामकरण, अन्नप्राशन, मुण्डन आदि विविध संस्कारों तक चलता रहता है। गायत्री परिवार की कार्यकर्त्ता बहिनें निरन्तर उन दम्पतियों से सम्पर्क कर आवश्यक प्रेरणाएँ देती रहती हैं।

अनुकूल मानसिकता के साथ गर्भ धारण के बाद गायत्री परिवार की बहिनें पुंसवन संस्कार कराती हैं। गर्भकाल के पूरे नौ महीनों तक उनसे सतत सम्पर्क रखकर योगाभ्यास, आहार, स्वाध्याय, गर्भ संवाद जैसे कार्यों के लिए प्रेरित करती रहती हैं। प्रसूतिकाल में भी संग रहती हैं और नवजात शिशु का स्वागत गायत्री मंत्र चादर ओढ़ाकर गायत्री मंत्र बोलते हुए करती हैं। इसके बाद शिशु के विकास के हर कदम पर उत्तम पुरोहित के रूप में शिशु के माता-पिता और उनके परिवारी जनों का पथ प्रदर्शन करती रहती हैं।

गायत्री चेतना केन्द्र मोडासा पर 18 मार्च को भी ऐसा ही कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें शिशु की चाह रखने वाले 11 जोड़ों का गर्भाधान से पूर्व मार्गदर्शन किया गया। चेतना केन्द्र संचालकों का कहना है कि गायत्री परिवार के इन प्रयासों से क्षेत्र में एक नई क्रान्ति का सूत्रपात हो रहा है। चेतना केन्द्र ने ऐसे दम्पतियों का मार्गदर्शन करने के लिए बहिनों की टोलियाँ गठित की हैं और उन्हें उनके कार्य के लिए हर प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं।

100 युगलों को अध्यात्म व संस्कार का महत्त्व समझाया

नवदम्पति सम्मेलन

सम्मेलन में भाग लेते नवदम्पति

गुना। मध्य प्रदेश : 3 अप्रैल को गायत्री शक्तिपीठ गुना में महिला मण्डल द्वारा नवदम्पति सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसके माध्यम से लगभग 100 दम्पतियों को श्रेष्ठ संतान के लिए आध्यात्मिक जीवन शैली अपनाने और संस्कार परम्परा से जुड़ने की प्रेरणा दी गई। श्रीमती उमा शर्मा, श्रीमती शशि मिश्रा, श्री नारायण प्रसाद शर्मा ने सभा को सम्बोधित किया। गर्भ काल में शिशु के विकास और उस पर पड़ने वाले माँ-पिता, परिवार के प्रभाव को दर्शाने वाली वीडियो फिल्म भी दिखाई गई।

संस्कार प्रधान कार्यक्रम में बहिनों में नवजागृति के प्रयास

लहार, भिण्ड। मध्य प्रदेश

स्नेह नगर कॉलोनी लहार में दो दिवसीय पंच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में 300 लोगों ने भाग लेकर बेहतर जीवन की ओर अग्रसर होने के लिए कदम बढ़ाये। इस कार्यक्रम में 75 भाई-बहिनों ने दीक्षा ली। उन्होंने व्यसन और अवगुण छोड़ने के साथ-साथ नियमित उपासना, स्वाध्याय के संकल्प लिए। श्रीमती बृजलता श्रीवास्तव ने यज्ञ संचालन करते हुए गर्भवती बहिनों को पुंसवन संस्कार के लिए प्रेरित किया। उन्होंने व्यास स्मृति के उद्धरणों के साथ पुंसवन संस्कार की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि पुंसवन संस्कार में बताए गए नियमों के पालन से गर्भस्थ शिशु शारीरिक-मानसिक दृष्टि से स्वस्थ एवं सुविकसित होता है।

पुंसवन संस्कार कराती बहिनें

121 बहिनों का सामूहिक पुंसवन संस्कार

झुमरी तिलैया, कोडरमा। झारखण्ड

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर झुमरी तिलैया में आयोजित सामूहिक पुंसवन संस्कार के कार्यक्रम में 121 बहिनों ने संस्कार कराया। अभियान की जिला संयोजिका सुनीता सिंह ने उन्हें शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा चलाए जा रहे राष्ट्रव्यापी अभियान 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कोडरमा जिले में प्रत्येक माह इस प्रकार के सामूहिक संस्कार समारोह आयोजित किए जाएँगे।

रामकथा के माध्यम से भारतीय संस्कृति का प्रचार-विस्तार करेंगे प्रशिक्षित वनवासी

गायत्री विद्यापीठ राजनांदगाँव में छः मासीय वनवासी कथा वाचक प्रशिक्षण

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़

गायत्री विद्यापीठ में एकल अभियान श्री हरिकथा योजना का छःमासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें दूरस्थ वनांचल क्षेत्रों से आए लगभग 60 प्रशिक्षणार्थी शामिल थे। उन्हें अनुभवी आचार्यों के मार्गदर्शन में श्री रामचरित मानस कथा के साथ-साथ जीवन जीने की कला सम्बन्धी शिक्षाएँ प्रदान की गईं। ये प्रशिक्षत परिजन सुदूर वनांचल क्षेत्रों में जाकर गायन, भजन आदि के साथ रामचरित मानस का प्रचार-प्रसार करेंगे, ताकि लोग श्रीराम के आदर्शों को अपनाने के लिए प्रेरित हों।

छः मासीय प्रशिक्षण का समापन समारोह राष्ट्रीय स्वयं संघ के प्रमुख श्री भैया जी जोशी (झारखण्ड), एकल अभियान प्रमुख श्री नंदकिशोर जी सुरजन, श्री महाप्राण पुरोहित जी बस्तर, श्री अशोक सहमंत्री ओडिशा, हरि सत्संग समिति से श्री सुभाष जी एवं अन्य पदाधिकारियों, गायत्री विद्यापीठ से श्री हरीश गाँधी आदि गणमान्यों की मुख्य उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। श्री भैया जी जोशी ने श्री राम को मयार्दा पुरूषोत्तम क्यों कहा जाता है, इसकी सुंदर व्याख्या की। श्री महाप्राण पुरोहित जी ने कहा कि धर्म-संस्कृति को आगे बढ़ाते रहने हेतु इस प्रकार के कार्यक्रमों की जरूरत है।

शान्तिकुञ्ज द्वारा नया ग्रंथ प्रकाशित

सम्पूर्ण योग वासिष्ठ कथासार

योग वासिष्ठ कथोपकथन के रूप में अद्भुत ग्रन्थ है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामचंद्र जी जब कर्मयोग से विरत होने लगे, तब गुरुदेव वसिष्ठजी ने योग वासिष्ठ की शिक्षा देकर उन्हें कर्मयोगी बनाया। वैराग्य, मुमुक्ष-व्यवहार, उत्पत्ति स्थिति, उपशम एवं निर्वाण-प्रकरणों जैसे दुरूह विषयों को सहज भाव में हृदयंगम कराकर उन्हें कर्मयोग में प्रवृत्त कर दिया था। यही गुरुकृपा मोक्षमार्ग भी प्रदान करती है।

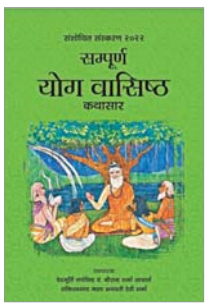

मूल ग्रन्थ बहुत बड़ा है। युगऋषि ने जनसुलभ भाषा में उसका कथासार लिख दिया है। शान्तिकुञ्ज के वेद विभाग ने अथक परिश्रम कर सम्पूर्ण योग वासिष्ठ के कथासार को लगभग 450 पृष्ठों में समाहित किया है। यह ग्रंथ न केवल पाठकों, साधकों के लिए सर्वग्राह्य हो गया है, वरन बड़े पुस्तकालयों में भी संग्रहित करने में सुविधाजनक है।

सम्पूर्ण ग्रन्थ के कथासार को जन-जन तक पहुँचाने के भाव से यह पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। इसके साथ दो दुर्लभ और महत्त्वपूर्ण संग्रह नारद भक्ति सूत्र तथा राघव यादवीयम् स्तोत्राणि भी जोड़ दिये गये हैं। आशा है, जिज्ञासु पाठकों को यह स्वरूप रुचिकर लगेगा।

गायत्री तपोभूमि, मथुरा में आयोजित हो रहे विशिष्ट शिविर

माता सरस्वती शिविर

[केवल 14 से 20 वर्ष के छात्र-छात्राओं के लिए]

लड़कों का शिविर
दिनांक 23 मई से 29 मई 2022

लड़कियों का शिविर
दिनांक 02 जून से 08 जून, 2022

यह शिविर छात्र-छात्राओं के नैतिक, बौद्धिक स्तर को सुदृढ़ करने हेतु व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से आयोजित किया गया है। इस शिविर में पढ़ने, याद करने की विधि, बुद्धि कुशाग्र करने, स्मरण शक्ति बढ़ाने, योग-आसन-प्राणायाम-ध्यान, जीवन जीने की कला, सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन, दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन का प्रशिक्षण होगा।

नोट : - लड़कियाँ ग्रुप में अथवा अपनी माँ के साथ आ सकती हैं। शिक्षक अपने विद्यालय की छात्राओं अथवा छात्रों को एक साथ लेकर आ सकते हैं।

प्राणवान कार्यकर्ता शिविर

दिनांक 16-17 जुलाई, 2022 (गुजरात छोड़कर संपूर्ण भारत के लिए)
दिनांक 09-10 अक्टूबर, 2022 (गुजरात प्रांत के लिए)

प्राणवान परिजन अपनी क्षमताओं एवं विशिष्टताओं को पहचानें, ईश्वरप्रदत्त समय-संपदा का सुदपयोग करें तथा गुरुसत्ता के द्वारा निर्देशित जनोपयोगी कार्यों को हाथ में लेकर उल्लेखनीय योगदान प्रस्तुत करें; यही इन शिविरों का उद्देश्य है।

उपरोक्त शिविरों के अनुशासन, दिनचर्या, साथ में लाने वाली आवश्यक सामग्रियों की जानकारी के लिए अवश्य सम्पर्क कीजिए :-

युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा-281003
फोन नं० : (0565) 2530115, 2530128, 2530399
मो० 09927086287, 09927086289, 9412171035 (वॉट्सएप)
ई-मेल : yugnirman@yugnirmanyojna.org

अपना आवेदन नाम, पूरा पता, आयु तथा शिक्षा, मोबाइल नंबर आदि विवरण सहित उपरोक्त ई-मेल, व्हॉट्सएप पर भेज सकते हैं। **कृपया स्वीकृति लेकर ही आएँ।**

गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हुईं शान्तिकुञ्ज की कार्यकर्त्ता बहिनें

स्व. श्रीमती सुभाषकली देवी, धर्मपत्नी श्री राजभान सिंह

शान्तिकुञ्ज की जीवनदानी कार्यकर्त्ता श्रीमती सुभाषकली देवी का दिनांक 3 अप्रैल 2022 को 62 वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। वे वर्तमान में उत्तर जोन में सेवाएँ प्रदान कर रहे ग्राम रामनगर, सतना (मध्य प्रदेश) के मूल निवासी श्री राजभान सिंह की धर्मपत्नी थीं। वे शान्तिकुञ्ज में महिला मण्डल के साथ जुड़े रहकर यज्ञ, संस्कार, स्वावलम्बन जैसे कार्यों के सम्पादन में महत्त्वपूर्ण योगदान देती रहीं। विगत कुछ वर्षों से वे गंभीर बीमारी का सामना कर रही थीं। उल्लेखनीय है कि श्री राजभान सिंह और उनके भाई श्री अरुणेन्द्र सिंह अपने पूरे परिवार के साथ सन् 1985 से जीवनदानी कार्यकर्त्ता के रूप में मिशन में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

स्व. श्रीमती प्रमिला बेन बेंगड़

परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के स्नेह-संरक्षण में शान्तिकुञ्ज में रहकर 51 वर्षों तक सेवा-साधना का सौभाग्य प्राप्त करने वाली श्रीमती प्रमिला बेन बेंगड़ 27 मार्च 2022 को पावन गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गईं। वे अंजार, कच्छ (गुजरात) की मूल निवासी थीं। शान्तिकुञ्ज की स्थापना के वर्ष-1971 में ही अपने पति श्री हेमराज जी एवं बड़ी बहिन काशी बेन के साथ शान्तिकुञ्ज आ गई थीं। आरम्भ से ही उन्होंने गायत्री मंदिर की व्यवस्था सँभाली और उसे आजीवन बड़ी कुशलता के साथ निभाती रहीं।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रतिकुलपति देसंविवि ने स्पिक मैके कार्यक्रम में कहा

सद्भावनाओं का संचार करता है शास्त्रीय संगीत

11 अप्रैल के दिन देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रार्थना सभागार में स्पिक मैके सोसायटी फॉर द प्रमोशन ऑफ इंडियन क्लासिकल म्यूजिक एंड कल्चरअमंग असिस्टेंट यूथ) कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ऑल इंडिया रेडियो और टेलीवीजन के ए ग्रेड के जाने माने भारतीय शास्त्रीय संगीत के गायक बनारस घराने से पधारे पंडित रितेश मिश्र और रजनीश मिश्र ने कार्यक्रम के दौरान विभिन्न रागों की प्रस्तुती दी। जिसमें 'भवसागर से पार करो प्रभु', 'जो राग रंग का भर-भर प्याला पिवे' और 'पिलावे साधु बोल' के गायन ने कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को संगीत के भावों से सराबोर दिया।

पंडित रितेश मिश्र और रजनीश मिश्र संगीत प्रस्तुति देते हुए

बनारस घराने के मिश्र बन्धुओं की कला से लाभान्वित हुए शिक्षक-विद्यार्थी

'स्पिक मैके' एक गैर राजनीतिक, राष्ट्रव्यापी, स्वैच्छिक आंदोलन है। इसका उद्देश्य स्कूल-कॉलेजों में पढ़ रही युवा पीढ़ी में भारतीय शास्त्रीय संगीत और संस्कृति को बढ़ावा देना है।

कार्यक्रम से पूव मिश्र बन्धुओं ने प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी से भेंट की। प्रतिकुलपति ने उन्हें विश्वविद्यालय की योजनाओं एवं संगीत से सम्बन्धित पाठ्यक्रमों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि संगीत भावनात्मक विकास में अत्यंत सहायक है। देसंविवि में संगीत चिकित्सा पर नवीन शोध कार्य हो रहे हैं तथा कई रोगों के इलाज में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता संगीत विभाग के अध्यक्ष डॉ. शिवनारायण प्रसाद ने की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति श्री शरद पारधी, कुलसचिव श्री बलदाऊ देवांगन, विभिन्न विभाग के विभागाध्यक्ष, शिक्षक, विद्यार्थीगण व शास्त्रीय संगीत प्रेमी कार्यकर्ता उपस्थित थे।

दिया दिल्ली का राष्ट्रीय वेबिनार 'युवा अभ्युदय-2022'

वैश्विक समस्याओं के समाधान की दिशा में सक्रिय हो युवाशक्ति - डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी

दीया दिल्ली ने अपना आठवाँ वार्षिक कार्यक्रम 'युवा अभ्युदय-2022' शानदार सफलता के साथ पूरा किया। 27 मार्च को वेब प्लेटफॉर्म पर राष्ट्रीय वेबिनार के रूप में आयोजित इस कार्यक्रम से नई पीढ़ी के 1000 युवाओं में विचार क्रांति आंदोलन के मूल्यों को स्थापित करने में सफलता मिली, जो इस कार्यक्रम से ऑनलाइन जुड़े थे। देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज से जुड़े आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रतिकुलपति, देसंविवि. मुख्य वक्ता थे।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने उनमें सुप्तावस्था में विद्यमान संभावनाओं को जाग्रत् करने की प्रेरणा दी और सूत्र बताए। उन्होंने दिया की 'संभवम' परियोजना पर भी प्रकाश डालते हुए कहा कि युवा आगे आएँ और वर्तमान समय में दुनिया के सामने आने वाली समस्याओं के समाधान प्रदाता बनें।

श्री शरद विवेक सागर हार्वर्ड यूनिवर्सिटी (यूएसए) से वेबिनार से जुड़े। उन्होंने स्वयं का उदाहरण देते हुए छात्रों को जीवन के प्रति एक व्यापक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए प्रेरित किया। श्री शुभम कुमार ने लैबसना (मसूरी) से जुड़कर प्रतियोगी परीक्षाओं में बेहतर सफलता के लिए लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता और दृढ़ इच्छा शक्ति रखने की प्रेरणा दी।

युवा अभ्युदय के मुख्य वक्ता डॉ. चिन्मय जी, प्रतिकुलपति देसंविवि, श्री शरद विवेक सागर (हॉवर्ड विवि.), श्री शुभम कुमार-मसूरी तथा श्री मनीष कुमार-दिया संयोजक

सेवा उत्कृष्टता पुरस्कार

दिया दिल्ली की 'संभवम' परियोजना के अन्तर्गत प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उत्प्रेरण, बाल संस्कार शाला, वृक्षारोपण जैसी विविध गतिविधियों से जुड़े शिक्षक-सहयोगियों को 'दिया सेवा उत्कृष्टता पुरस्कार' प्रदान किया गया। कार्यक्रम के अंतिम भाग में 'संभवम' (सिविल सेवाओं के लिए निःशुल्क कोचिंग) और 'उन्नति मेंटरशिप प्रोग्राम' (सिविल सेवाओं के लिए) के 2022 के बैच की घोषणा की गई।

श्री गोपाल कृष्ण शर्मा-देसंविवि (संचालन), श्री संतोष कुमार सिंह-शान्तिकुञ्ज (तकनीकी सहायता), शांतिकुंज की संगीत टीम, नेतराम जी-पुणे (रचनात्मक पोस्टर डिजाइनिंग), डॉ. वरुण मानेक-मुंबई का वेबिनार की सफलता में विशेष सहयोग मिला। दिया दिल्ली के संयोजक श्री मनीष कुमार ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

'दिया' छत्तीसगढ़ का दिया उत्कर्ष एवं सम्मान समारोह

पेण्ड्रा, बिलासपुर। छत्तीसगढ़

'उठो जवानो वसुंधरा पुकारती' जैसे ओजस्वी गीतों एवं अपनी पत्रिका 'छत्तीसगढ़ मित्र' के माध्यम से आजादी की अलख जगाने वाले श्री माधव राव सप्रे जी की पावन कर्मभूमि पेंड्रा की पावन धरती एक बार पुनः राष्ट्र के जागरण एवं युग निर्माण के लिए संकल्पित हुई। अवसर था दिव्य भारत युवा संघ छत्तीसगढ़ द्वारा युवा उत्कर्ष एवं युवा सम्मान समारोह 2022 के आयोजन का।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री दिलीप पाणिग्रही ने कहा कि इस दुनिया को बदलने के लिए ऐसे व्यक्तित्वों की आवश्यकता है, जिनका जीवन उन प्रकाश स्तंभो की तरह हो जो भटके

राहियों को दिशा दिखा सकें, जो पूज्य गुरुदेव की तरह समाज को सही दिशा दिखाने का साहस रखते हों।

दिया छत्तीसगढ़ प्रांत संयोजक डॉ. पी.एल. साव ने कहा कि युवा वह है जिसके हाथों में शक्ति हो, पैरो में गति हो, हृदय में ऊर्जा हो, आँखों में सपने हों और मन मे उसे पूरा करने का संकल्प हो।

कार्यक्रम में उपस्थित अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्रीमती अर्चना झा एवं सी.ई.ओ. जनपद पंचायत पेंड्रा सुश्री इन्दिरा मिश्रा ने समाज के नवनिर्माण में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित किया। दिया वुमेन विंग छत्तीसगढ़ की संयोजक श्रीमती अनीता साहू जी ने भी स्वर्णिम भविष्य के लिए अग्रणी संकल्प कराया ।

इस कार्यक्रम का आयोजन दिया ग्रुप जिला गौरेला-पेंड्रा-मरवाही के द्वारा जिला अध्यक्ष ओमप्रकाश बलभद्रे के कुशल नेतृत्व में हुआ। चित्रकला एवं सामूहिक नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। जिला जीपीएम के विभिन्न सामाजिक संगठनों, जिन्होंने दिया की सक्रियता में अद्वितीय सहयोग किया, उन सभी संगठनों के सदस्यों को सम्मानित किया गया।

सावधान रहें : भ्रम-भटकावों से बचें

इंटरनेट के वर्तमान युग में नित्य नए-नए एप्लीकेशन विकसित हो रहे हैं। शान्तिकुञ्ज की इण्टरनेट सेवाओं से भी करोड़ों लोग जुड़े हैं और लाभ ले रहे हैं। लेकिन शान्तिकुञ्ज जहाँ विशुद्ध लोकमंगल की भावना के साथ विचार क्रान्ति अभियान एवं रचनात्मक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित कर रहा है, वहीं बहुत से एप्लीकेशन्स व्यावसायिक दृष्टिकोण भी रखते हैं। ऐसे एप विभिन्न प्रकार के आकर्षण प्रदान करते हैं, अपने उपभोक्ताओं को रजिस्ट्रेशन/लॉगइन करने के लिए कहते हैं एवं आई.डी. कार्ड भी देते हैं।

कृपया ध्यान दें कि विभिन्न एप पर गायत्री परिवार से मिलती-जुलती सामग्री देखकर परिजन उन एप्स का उपयोग करने लगते हैं और फिर शान्तिकुञ्ज से विभिन्न प्रकार की पूछताछ और शिकायतें करते हैं।

कृपया सावधान रहें, ऐसे भ्रम-भटकावों से बचें। शान्तिकुञ्ज की किसी भी वेबसाइट या एप्लीकेशन पर उपभोक्ताओं का पंजीयन नहीं किया जाता और न ही किसी प्रकार का आइडेंटिटी कार्ड दिया जाता है। शान्तिकुञ्ज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा चलाई जा रही अधिकृत वेबसाइट एवं एप्लीकेशन्स की सूची यहाँ दी जा रही है। व्हॉट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया पर कोई भ्रामक संदेश मिलते हैं तो उनसे बचें। अनधिकृत वेबसाइट्स में गायत्री परिवार के अधिकृत लोगो-लाल मशाल आदि का प्रयोग न करें।

युवा युगसृजेता श्रावस्ती (उ.प्र.)

पीलीभीत जिले में ब्लॉक स्तरीय सम्मेलनों का शुभारम्भ हुआ

पीलीभीत। उत्तर प्रदेश

प्रांतीय युग सृजेता समारोह श्रावस्ती के प्रयाज अभियान के अंतर्गत दिनांक 27 मार्च से जनपद पीलीभीत में ब्लॉक स्तरीय युवा सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। प्रथम कार्यक्रम लिटिल स्टार अकेडमी बरखेड़ा में हुआ। जिला समन्वयक युवा प्रकोष्ठ श्री जगदीश शरण मौर्य ने इसका संचालन किया। श्री लाला राम, श्री दीनानाथ कश्यप, श्री महेश शर्मा, श्री लालता प्रसाद, श्री अनंत कुमार पालिया ने विविध विषयों से युवाओं का पथ प्रदर्शन किया।

- पूरनपुर, बीसलपुर, बरखेड़ा के कार्यकर्त्ताओं को जिम्मेदारी सौंपी गई।
- ब्लॉक स्तर पर 50 सक्रिय युवाओं के समूह का पंजीयन किया गया।
- युग सृजेता समारोह के लिए मंत्र लेखन साधना, समयदान, अंशदान के संकल्प लिए गए।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 27.4.2022
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23